सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संयुक्ता

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

2024-25

अंक ग्यारहवाँ

गार्डन ऑफ फ्रेगरैंस, सेक्टर 36, चंडीगढ़

रोज़ गार्डन, सेक्टर 16, चंडीगढ़

संपादकीय मंडल

प्रधान सरंक्षक	:	श्री समीर मेहता, प्रधान निदेशक
मुख्य सरंक्षक	:	श्री रमेश कुमार शर्मा, निदेशक, प्रशासन
मुख्य संपादक	:	श्रीमती रश्मि महाजन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सह संपादक	:	श्री आमोद दीक्षित, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अंक	:	ग्यारहवाँ (ई–पत्रिका)
प्रकाशक	:	कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़

टिप्पणी

पत्रिका मे छपी रचनाओं मे व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने विचार है। संयुक्ता परिवार का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता उसमे प्रस्तुत तथ्यों तथा आंकड़ों की प्रमाणिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	संदेश	पृष्ठ सं.
1.	प्रधान निदेशक का संदेश	1
2.	महानिदेशक (रक्षा सेवाएँ) चडीगढ़ का संदेश	2
3.	प्रधान महालेखाकर (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का संदेश	3
4.	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा चंडीगढ़ का संदेश	4
5.	प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़	5
6.	महालेखाकर (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू. टी. चंडीगढ़ का संदेश	6
7.	मुख्य सरंक्षक का संदेश	7
8.	संपादकीय	8
9.	पाठकों के पत्र	9 – 11
10.	रचनाएँ	––

11 वें अंक प्रकाशित की जानी वाली रचनाओं का ब्यौरा

क्रम संख्या	शीर्षक	श्री/सुश्री/श्रीमती	पृष्ठ सं.
1.	आतंकवाद की छाया	अमित सिंह, व.ले.प.अ.	13
2.	जा मैं तुझे आजाद करती हूँ	अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ. (कमर्शियल)	14
3.	घमंड	बलजिंदर कौर, व.ले.प.	15–16
4.	मैं/गूंज (दो कविताएं)	मुनीष भाटिया, व.ले.प.अ	17
5.	जीत	अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ. (कमर्शियल)	18
6.	जुगाड़ : किफायती नवाचार	आशीष कुमार, स.ले.प.अ	19–20
7.	प्रयागराज महाकुंभ	विजय कुमार अधलखा, स.ले.प.अ.	24–25
8.	माता–पिता की सेवा एक परम कर्त्तव्य	यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	26
9.	शिक्षा का महत्व	रामपाल मौर्या, लेखापरीक्षक	27–28
10.	नीम	सुदेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	29
11.	जीवन में खेलों का महत्व	आमोद दीक्षित, स.ले.प.अ.	30–31
12.	पंख	मुनीष भाटिया, व.ले.प.अ.	32–33
13.	वसंत पंचमी सरस्वती पूजा का महत्व	आशीष कुमार, स.ले.प.अ	34
14.	बरसात के दिनों में हिमाचल की चुनौतियाँ	रोहित राणा सुपुत्र श्री यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	35
15.	ढाई अक्षर	बलजिंदर कौर, व.ले.प.	36–37
16.	जीवन में एक कदम का महत्व	ओजस्व चौहान सुपुत्र श्री दिलदार सिंह, लेखापरीक्षक	38–40
17.	माँ–प्रकृति	अमित सिंह, व.ले.प.अ.	41–43
18.	माँ–बाप	पंकज सिंह, लेखापरीक्षक	44
19.	योग का महत्व	विजय कुमार अधलखा, स.ले.प.अ.	45–46
20.	कृत्रिम बुद्धिमता वरदान या अभिशाप	आमोद दीक्षित, स.ले.प.अ.	47–48
21.	वसंत की वाणी	यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक	49–50
22.	मुझे आदत नहीं बातों की...	अनंत राम, हिन्दी अनुवादक	51

प्रधान संरक्षक का संदेश

संयुक्ता का 11 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है । हमारा प्रयास रहा है कि हिंदी के प्रचार–प्रसार के साधन के रूप में इसकी गुणवत्ता एवं उपयोगिता में निरंतर प्रगति हो । संपादक मंडल एवं प्रकाशक मंडल सदा ही इस ओर तत्पर है । कार्यालय के कार्मिकों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने तथा लेखन के माध्यम से अपनी प्रतिभा को उजागर करने में पत्रिका के प्रकाशन से निश्चित रूप से सहायता मिली है।

मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों, रचनाकारों तथा संपादक व प्रकाशक मंडल के सभी सदस्यों को उनकी सहभागिता के लिए धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि आगामी अंकों के प्रकाशन के लिए भी वे इसी तरह प्रतिबद्ध रहेंगें ।

सभी को मेरी ओर से बधाई व शुभकामनाएं।

समीर मेहता
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका ''संयुक्ता'' का ग्यारहवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार का एक सशक्त माध्यम है बल्कि हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को भी मंच प्रदान करती है।

''संयुक्ता'' के प्रत्येक अंक में ज्ञानवर्धक लेख, कविताएं, संस्मरण और सांस्कृतिक गतिविधियों की झलक पढ़कर हमेशा से यह स्पष्ट होता रहा है कि हमारे सहयोगी न केवल अपने कार्यक्षेत्र में दक्ष हैं बल्कि साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भी विशेष रुचि रखते हैं।

राजभाषा हिंदी हम सबकी अभिव्यक्ति की सहज भाषा है। यह पत्रिका हमें हिंदी में सोचने, लिखने और रचने की प्रेरणा देती है। मैं ''संयुक्ता'' की संपादकीय टीम सहित सभी रचनाकारों को इस सुंदर प्रयास के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि आने वाले वर्षों में यह पत्रिका और भी नई ऊंचाइयों को छुएगी।

आप सभी को शुभकामनाएँ।

संजीव गोयल,
महानिदेशक (रक्षा सेवाएं), चंडीगढ

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपका कार्यालय राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका 'संयुक्ता' के एकादश अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी अपने पूर्ववर्ती 10 अंकों की भांति ही भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध होगा।

राजभाषा के उन्नयन एवं प्रचार–प्रसार के लिए विभागीय पत्रिकाएं एक सशक्त माध्यम है तथा राजभाषा के निरंतर स्वर्णिम विकास में यह एक सार्थक कदम है। इनके माध्यम से हम विभिन्न कार्यालयों की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत होते हैं। पत्रिका 'संयुक्ता' में प्रकाशित विविध, प्रासंगिक एवं स्तरीय रचनाएँ इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि कार्यालय के समर्पित कार्मिकों ने अपनी रचनात्मकता, प्रतिबद्धता तथा सृजनशीलता से पत्रिका को उत्कृष्टता की दिशा में सुदृढ़ किया है। इस दिशा में आप सभी का निरंतर एवं सतत प्रयास न केवल प्रशंसनीय है अपितु अन्य के लिए प्रेरणादायी एवं अनुकरणीय भी है।

मैं सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल को इस पत्रिका में उनके योगदान के लिए बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चंडीगढ

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। विभागीय पत्रिकाओं का हिंदी के प्रचार–प्रसार और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान रहता है और कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि भी बढ़ती है।

भारत एक बहु–भाषी देश है और हिंदी देश के अधिकतम स्थानों में बोली और समझी जाती है। इसके द्वारा भारत के साधारण से साधारण व्यक्ति तक पहुंचा जा सकता है। हमारे देश की विभिन्न भाषाएं मोतियों की भांति हैं और हिंदी उन मोतियों के हार के रूप में भारत माँ का सौंदर्य बढ़ा रही है। हिंदी सदैव से देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। हम सबका यह कर्तव्य है कि कार्यालय में राजभाषा हिंदी से जुड़े दायित्वों का निर्वहन पूर्ण रूप से सुनिश्चित करते हुए कार्यालयीन कार्यों में अधिक से अधिक सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करें।

आशा करता हूँ कि हिंदी की प्रगति में हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' इसी तरह अपना योगदान देती रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

आशुतोष शर्मा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चंडीगढ़

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका संयुक्ता'' के 11वें अंक का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी लेखकों तथा संपादक–मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

श्रृंगार में जो स्थान बिंदी का है वही स्थान देश में राजभाषा हिंदी का है। जैसा कि विदित है कि हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा दिया है। हम सभी का नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्य है कि सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी को नई दिशा देने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें एवं हिंदी में कामकाज करने में गौरवान्वित महसूस करें।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन तथा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की दिशा में हिंदी पत्रिका का नियमित प्रकाशन महत्वपूर्ण कदम है। मुझे विश्वास है कि ''संयुक्ता'' का यह अंक भी हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार और प्रयोग को बढ़ावा देने में अपने पूर्व अंकों की भांति प्रेरणादायक सिद्ध होगा।

पत्रिका की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "संयुक्ता" के 11वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी रचनाकारों , पाठकों और सह– संपादक मण्डल को बधाई देती हूं ।

कार्यालयीन पत्रिकाओं ने कार्यालय में हिंदी में काम–काज को बढ़ावा देने के नए आयाम प्रशस्त किए हैं । हिंदी को बढ़ावा देने के अन्य कई माध्यम हैं लेकिन विभागीय पत्रिकाएं हिंदी के प्रचार–प्रसार की रीढ़ हैं । हिंदी पत्रिकाएँ विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं । ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय–समय पर जानकारी मिलती रहती है। हिंदी न केवल सरकारी काम–काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है। पत्रिका प्रकाशन के संबंध में मुझे आशा है कि "संयुक्ता" भविष्य में भी हिंदी भाषा को और सार्थकता प्रदान करने में अपना योगदान देती रहेगी ।

"संयुक्ता" पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका से जुड़े राजभाषा परिवार के सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देती हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ ।

तृप्ति गुप्ता
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी.चंडीगढ़

मुख्य संरक्षक का सदेंश

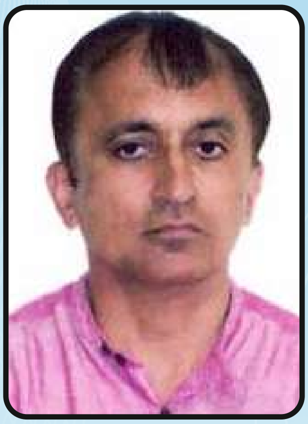

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका संयुक्ता के 11वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने संयुक्ता के माध्यम से अपने अमूल्य विचार प्रकट कर राजभाषा हिंदी के प्रति जो श्रद्धा व निष्ठा प्रकट की है वह सरहनीय है। मुझे इस बात की खुशी है कि पत्रिका का स्तर लगातार बढ़ रहा है और इसमें समाहित रचनाओं और रचनाकारों की पृष्ठभूमि में विविधता है। पत्रिका के प्रकाशक एवं संपादक मंडल द्वारा अच्छा कार्य किया गया है।

अंत में सभी पाठकों, रचनाकारों और पत्रिका के प्रकाशन में सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को बधाई देना चाहूँगा जिनके प्रयास से इसका उतरोत्तर प्रकाशन एवं विस्तार संभव हो पाया है।

रमेश कुमार शर्मा
निदेशक (प्रशासन)

संपादकीय

अपने कार्यालय की हिंदी पत्रिका के प्रकाशन की श्रृंखला को जारी रखते हुए हम "संयुक्ता" के ग्याहरवें अंक के साथ पाठकों के सामने प्रस्तुत हैं। इस अंक को प्रस्तुत करते हुए अतीव हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका के प्रत्येक अंक का प्रकाशन कार्यालय के अधिकारियों–कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा एवं स्नेह को दर्शाता है।

हिंदी हमारी केवल एक राजभाषा ही नहीं अपितु यह हमारी सांस्कृतिक पहचान एवं गौरव का प्रतीक भी है। कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के अधिकतम उपयोग को सुनिश्चित करना हमारी जिम्मेदारी है। अतः यह पत्रिका हमें एक ऐसा मंच प्रदान करती है जो भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ–साथ कर्मचारियों की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को उजागर करती है

हमारी हिंदी पत्रिका का प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि यह पत्रिका सभी कार्मिकों को समेकित रूप से एक करते हुए उन्हें राजभाषा हिंदी के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन प्रदान करती है। पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सुअवसर मिलता है।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए रचनाकारों एवं पत्रिका प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से योगदान देने वाले कार्मिकों को मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूँ।

आशा है कि पाठको को हमारी पत्रिका का यह अंक भी रुचिकर लगेगा और आप पाठकों का प्रेम और स्नेह भी हमारी पत्रिका "संयुक्ता" को मिलता रहेगा।

रश्मि महाजन,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी एवं मुख्य संपादक

पाठकों के पत्र

कार्यालय की पत्रिका संयुक्ता के 10 वें अंक के संदर्भ में निम्नलिखित प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई हैं जिसके लिए सभी कार्यालयों का धन्यवाद करते हुए आगे भी उनके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी।

आपके कार्यालय से प्रकाशित वार्षिक हिंदी ई पत्रिका संयुक्ता के 10 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई । बहुत–बहुत धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित प्रत्येक लेख व कविता पठनीय एवं उच्चकोटि की है। पत्रिका का आवरण, साज–सज्जा, मुद्रण सभी आकर्षक एवं सराहनीय है। सभी लेखक एवं पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति हेतु इस कार्यालय की ओर से बहुत सारी शुभकामनाएं।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.),
तमिलनाडु एवं पुदुच्चेरी, चेन्नई

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'संयुक्ता' के दसवें अंक की ई–पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.),
छत्तीसगढ़, रायपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी को समर्पित वार्षिक पत्रिका संयुक्ता की ई–प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ आकर्षक है तथा पत्रिका में संपादित रचनाएँ 'बेटा नहीं, बेटी हुई', ' क्या मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिए ' एवं 'मातृभाषा राजभाषा या जन की भाषा आदि पठनीय हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष रूप से बधाई का पात्र है। 'संयुक्ता' पत्रिका परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं कुशल संपादन के लिए 'संवाद' पत्रिका परिवार की ओर से अनेकानेक शुभकामनाएं।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (अवसरंचना)
नई दिल्ली

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'संयुक्ता' के 10 वें अंक के ई–पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं – किस्मत, बेटी, माता–पिता, मेरा व्यक्तित्व, वर्तमान में रहना सीख तथा तन्हा जीना मुश्किल है आदि।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.)

पश्चिम बंगाल ,कोलकाता

आपके कार्यालय की हिन्दी ई–पत्रिका 'संयुक्ता' के 10 वें अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री मुनीष भाटिया का लेख ''मानव चरित्र'', श्री रामपाल सिंह मौर्या का लेख ''माता–पिता, श्री अमृतपाल कौर का लेख ''मैं एक इंसान हूँ'', सुश्री संजना वर्मा का लेख ''किस्मत'' आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा) वाणिज्यिक

कर्नाटक, बेंगलुरु

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका ''संयुक्ता'' के दसवें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.)

हिमाचल प्रदेश, शिमला

आपके कार्यालय की पत्रिका संयुक्ता' के 10 वें अंक की ई–प्रति प्राप्त हुई , सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी में विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही

खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र है। पत्रिका में कुमारी चाहत सुपुत्री श्री शिव शरण की रचना अगर मैं एक पेड़ होती, श्री शिव चरण की रचना बेटा नहीं, बेटी हुई है, श्री मुनीष भाटिया की रचना मन दर्पण का प्रतिबिंब है : अभिव्यक्ति में हमारे शब्दों का चयन, श्री विजय कुमार की रचना एक्यूप्रेशर एक विधा और वर्तमान में रहना सीख, सुश्री संजना वर्मा की रचना किस्मत, श्री सुदेश कुमार की रचना क्या मनुष्य को शाकाहारी होना चाहिए, श्री आमोद दीक्षित की रचना पिता की स्मृति में, सुश्री अमृतपाल कौर की रचना मातृभाषा राजभाषा या जन की भाषा, श्री राम पाल सिंह मौर्या की रचना माता–पिता, श्री रमेश खटक की रचना हॉकी का विस्मृत जादूगर–पद्म श्री शंकर लक्ष्मण डाबला, और श्री मिनेश की रचना यात्रा वृतांत आदि रचनाएं ध्यान आकर्षित करती हैं।

पत्रिका के माध्यम से 'ख' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर चंडीगढ़ शहर की संस्कृति का चित्र पत्रिका को आकर्षक बना रहा है और साथ ही पत्रिका के अंतिम पृष्ठ पर सेक्टर–16 स्थित रोज़ गार्डन पत्रिका को और भी आकर्षण प्रदान करता है। पत्रिका में चंडीगढ़ शहर स्थित अन्य दर्शनीय स्थलों के चित्र भी बहुत सुन्दर है जो पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करते हैं। पत्रिका की साज–सज्जा बहुत उत्तम है।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ 'गिरनार' परिवार को पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.)

गुजरात, राजकोट

आलेख कहानियां एवं कविताएँ

आंतकवाद की छाया

श्री अमित सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

धड़कनों को थाम लेती है ये काली छाया,
माँ की गोद से छीन लेती है लाडली माया,
भीड़ में तन्हा कर देती है हर एक को,
जगह–जगह फैला देती है दर्द का साया ।

न हिंसा में कोई जीत है,न घृणा में सुकून,
सबको जोड़ना है जरूरी, ना हो कोई दूर
शांति के फूल खिलें हर गली–नुक्कड़ पे,
आओ मिलकर दूर करें ये अँधेरे घने अपने अपने जीवन से।

जहाँ प्रेम हो वहाँ ना पहुंचे कोई वार,
आतंकवाद मिटे, हो बस इंसानियत का संसार,
एकता की आवाज बुलंद हो हर तरफ,
आओ रचें एक ऐसा जहाँ, जहाँ हो सिर्फ सुकून का सफर ।

दूर तक ना चलेगी ये नफरत की राह,
और ना होगा कभी दर्द का साथ,
तब छूटेगी जंजीरें, टूटेगा बंधन,
फिर होगी जमीन पर बस शांति की बरसात ।

गुस्से की आग बुझ जाएगी,
आंसुओं की बारिश रुक जाएगी,
मिलेगा हर दिल को सुकून,
खत्म होगा आतंक का जुनून।

हिंसा की दीवारें गिर जाएँ,
प्यार के फूल सब तरफ खिल जाएं,
आओ मिलकर साथ चलें हम एक राह पर,
जहाँ हो सिर्फ इंसानियत का नाम व जहाँ।

जा मैं तुझे आजाद करती हूँ

श्रीमती अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ. (कमर्शियल)
का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

जा मैं तुझे आजाद करती हूँ,
तेरे सपने पूरे हों इन दुआओं से आबाद करती हूँ,
मैं रोकूँगी नहीं तुझे,
आगे बढ़ने से,
मैं तेरी खुशी का सम्मान करती हूँ।

मैं तुझसे अलग नहीं हूँ,
पर शायद मैं ही तुझे बर्बाद करती हूँ,
मेरे आराम से ज्यादा जरूरी है तेरा काम,
मैं इस बात को स्वीकार करती हूँ,
चल, मैं खुद को खुद से आजाद करती हूँ।

कुछ समझ आया,
हाँ, हम ही हैं
जो करें आबाद–बर्बाद,
और ऊँचाइयों से जो रखें परे,
करें फूलों की खुशबू से अनजान।

इसलिए और कोई तेरे पंख पकड़ कर नहीं बैठा ए परिंदे,
तूने खुद अपने पिंजरे ढाले हैं,
तुझे रोकने वाला न कोई खुदा,
न दुनिया वाले हैं।

ये कैद तेरी ही तुझको लिए बैठी है,
पर कोई आवाज है जो मुझसे कहती है...
खुद को बाँधना छोड़ दे,
खुद को टालना छोड़ दे,
छोड़ दे हर वो अफसाना,
जो कमजोर बनाए तुझे ।

दूर करे तेरे सपनों से तुझे,
जा, मिल उन महकी हवाओं से
जो तुझे तुझसे आजाद करें,
पर तेरे कतरे–कतरे को तुझसे मिला दें ।

घमंड

सुश्री बलजिंदर कौर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

एक आदमी को इस बात पर बहुत घमण्ड था कि मेरे बिना मेरा परिवार नहीं चल सकता। उसकी एक छोटी सी किराने की दुकान थी, उससे जो कमाई होती थी, उसी से उसके परिवार का गुजारा चलता था क्योंकि पूरे घर में कमाने वाला वह अकेला ही था। इसलिए उसे लगता था कि उसके बगैर सब भूखे मरेंगे।

एक दिन वह पूर्ण संत जी नामक संत के सत्सँग में गया, सन्त जी ने उस पर दृष्टि डाली और फरमाया, यह घमंड झूठा और फिजूल हैं कि मेरे बिना मेरा परिवार भूख से मर जायेगा, मैं ही सब को खाना खिलाता हूँ, ये सब मेरे प्रभु परमेश्वर की लीला है वो तो पत्थरों के नीचे रहने वाले जीवों को भी भोजन पहुंचाते हैं। इससे उस आदमी के मन में कई सवाल उठने लगे।

सत्संग समाप्त होने के बाद उस आदमी ने सन्त जी से कहा कि मैं दिन भर में कमाकर जो पैसे लाता हूँ, उसी से मेरे घर का खर्चा चलता है, मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग जल्दी ही भूख से मर जाएगें क्योंकि मेरे अलावा और कोई कमाता नहीं है। संत जी ने उसे बड़े ही प्यार से समझाया कि बेटा यह तुम्हारे मन का भ्रम है, हर व्यक्ति अपने भाग्य का ही खाता है। यह सुनकर वह आदमी बोला यदि ऐसा है तो आप मुझे साबित करके दिखाओ।

संत जी ने हँसकर कहा ठीक है बेटा तुम बिना किसी को बताए अपने घर से एक दो – महीने के लिए कहीं दूर चले जाओ। उसने पूछा कि मेरे परिवार का ध्यान कौन रखेगा तो संत जी ने समझाया बेटा परमात्मा सब का ध्यान रखता है, तुम्हें यही तो देखना है। संत जी की बात मानकर वह चुपचाप वहाँ से चला गया और वापिस नहीं आया तो कुछ दिनों के बाद गाँव में यह अफवाह फैल गई कि उसे शेर खा गया होगा, तभी वह घर वापिस नहीं आया।

उसके परिवार वाले कई दिनों तक उसे ढूढ़ते रहे और रोते भी रहे लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला। आखिरकार गाँव के कुछ भले लोग उनकी मदद के लिए आए। एक सेठ ने उसके बड़े लड़के को अपने यहाँ नौकरी दे दी। गाँव वालों ने मिलकर उसकी बेटी की शादी कर दी। गाँव का एक भला आदमी उसके छोटे बेटे की पढ़ाई का पूरा खर्च देने को तैयार हो गया। इस तरह उस आदमी के पूरे घर का खर्चा बड़े आराम से चलने लगा।

एक महीने बाद वह आदमी छिपता– छिपाता रात के वक्त अपने घर लौट आया। पहले तो घर वालों ने उसको भूत

समझकर दरवाजा ही नहीं खोला क्योंकि गाँव वालों के मुताबिक तो उसे शेर खा गया था, मतलब वह मर चुका था। वह बहुत परेशान हो गया । जब वह बहुत गिडगिडाया तब परिवार वालों ने दरवाजा खोला और उस आदमी ने सन्त जी से हुई सारी बातें अपने वीवी–बच्चों को बताई, तब उसकी बीवी बच्चों ने कहा कि अब हमें तुम्हारी कोई जरूरत नहीं। अगर तुम जीवित थे, तो पहले घर वापिस क्यों नही आए है, अब हम सुखी हैं और बहुत अच्छी जिंदगी जी रहे है। यह सुनकर उस आदमी का सारा घमंड चूर–चूर हो गया। वो रोता हुआ संत जी के डेरे पर पंहुचा और कहने लगा कि मुझे माफ कर दो मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गई। तब संत जी ने बड़े प्यार से कहा अब तुम्हें अपने घर वापिस जाने की क्या जरूरत है?

संत जी ने समझाया बेटा इस जगत को चलाने का दावा करने वाले बड़े–बड़े बादशाह मिट्टी हो गए दुनिया उनके बिना भी चलती रही और चल रही है। इसलिए अपनी ताकत का, अपने पैसे का, अपने काम काज का और अपने ज्ञान इत्यादि का घमण्ड करना फिजूल है। अब तुम्हें अपना बचा हुआ जीवन उस परमेश्वर दुनिया के मालिक की भक्ति में और लाचारों की सेवा में लगा कर इसे सफल करना है। वह आदमी संत जी के चरणों में गिर पड़ा और रोते हुए बोला कि आप जो भी कहेंगें आज से मैं वही करूंगा कभी घमण्ड नहीं करूँगा। इस प्रकार हम सब को भी यह सोचना चाहिए कि कहीं हम भी तो किसी चीज का घमण्ड तो नहीं कर रहे हैं।

इस कहानी से सीख मिलती है कि किसी भी चीज का घमंड नहीं करना चाहिए एवं यह कहानी हमें आत्मचिंतन करने पर मजबूर करती है कि क्या हम व्यक्तिगत जीवन में किसी भी चीज का घमंड तो नहीं कर रहे हैं।

दो कविताएँ

श्री मुनीष भाटिया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़

मैं

मैं कौन हूँ, यह ना पहचान सका,
हर रोज खुद से करता सवाल यही,
मांस–मज्जा से बनी ये देह,
क्या यही मैं हूँ या बस एक लेख?
जीवन की भागमभाग में खोया,
मोह–माया में खुद को ही ढोया,
,नाम कमाया, धन भी जोड़ा,
फिर भी अंदर रहा कुछ तो टूटा,
मरना सभी को एक दिन है तय,
फिर क्यों 'मैं' बना बड़ा भय?
जो भी मिला, यहीं रह जाएगा,
साथ तो अंत में शून्य ही जाएगा।
खाने–पीने, उठने–बैठने तक,
क्या जीवन की यही है रीत?
या फिर है कुछ और सत्य छुपा,
जो आत्मा की गहराई में अनदेखा
मैं कौन हूँ समझ ना पाया ये मन,
नश्वर है देह और कर्म यहाँ महान।
प्रेम, करुणा का दीप 'मैं' में व्याप्त,
इसी में छुपा जीवन का राज।

गूंज

क्षणभंगुर सा जीवन मानव का,
हर दिन एक नया सपना बुनता,
अपनों की खातिर जो शहर बसाए,
मिट्टी में मिलने का डर सताये...
जीना है या जाना कब है,
इस रहस्य से अनजान सब हैं,
मिथ्या अभिमान का मोल ना समझा,
ये तेरा वो मेरा, सब कुछ बस सपना,
जहाँ भर का संग्रह करता इंसान,
पर अंत में सब छूटे, यही सत्य पहचान...
जीना है या जाना कब है,
साँसों में ये सवाल गहरे सब हैं
रिश्तों का मायाजाल खुद ही बुनता,
हर पल बेखबर, गंवाये जीवन ,
आशाओं में उलझा, हकीकत से दूर,
जमीं पर घर भूल, बना रहा नूर...
जीना है या जाना कब है,
इस गूंज का जवाब कहाँ है?

जीत

श्रीमती अमृत पाल कौर, व.ले.प.अ. (कमर्शियल)

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

हम रोशन होंगे अंधेरों में,
आग लगी है दिल ए बसेरे में,
मेहनत का तेल डालते रहो,
बुझे न आग हवा के फेरों से,

रातें भी बदलेंगी सवेरों में,
बस रूक जाना नहीं,
चाहे गुजरना पड़े मुश्किलों के डेरों से,
डरना नहीं,
क्योंकि आखिर में तो जीत हमारी ही होगी अंधेरों से ।

इसलिए तो कहते हैं
रुक जाना नहीं,
तू कहीं हार के,
काँटों पे चलके,
मिलेंगे साये बहार के।

जुगाड़ : किफायती नवाचार

श्री आशीष कुमार, स.ले.प.अ.

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

जुगाड़ सामान्य हिंदी बोलचाल में उपयोग किया जाने वाला वह शब्द है जिसका अर्थ है सीमित संसाधनों द्वारा त्वरित गति से कम लागत में ही किसी भी समस्या का निदान कर देना । पूरे उत्तर भारत में इस शब्द का भरपूर इस्तेमाल किया जाता है। भाषाई विद्वानों ने 'जुगाड़' को भारतीय नवाचार का भी नाम दिया है। जुगाड़ एक ऐसी धारणा या मानसिकता है जिसमें कठिन या विपरीत परिस्थितियों में औपचारिक माध्यमों को नजरअंदाज करते हुए सामने आयी समस्या का तात्कालिक निदान आसानी से किया जाता है । कहीं न कहीं इस शब्द में स्थापित प्रणाली, परम्परागत तौर तरीकों से बचने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है ।

वर्तमान एवं आधुनिक यांत्रिकी के युग में भी भारतीय समाज का एक बड़ा वर्ग खासकर ग्रामीण समाज में अपनी आर्थिक स्थिति के कारण उपलब्ध तथा सीमित संसाधनों से ही किफायती तरीकों से अपने उत्थान एवं प्रगति के अवसरों को सुनिश्चित करने हेतु 'जुगाड़ तंत्र' प्रणाली के विकल्प को अपनाते है । हालाँकि ये समाधान कभी–कभी स्थायी या टिकाऊ नहीं भी होते हैं लेकिन तात्कालिक निदान अवश्य दे देते है। भविष्य की सुरक्षा संबंधी दृष्टिकोण को भी जुगाड़ तंत्र में नजरअंदाज किया जाता है ,चाहे अज्ञानवश ही क्यों ना हो । 'जुगाड़' को भारतीय रोजमर्रा के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। अपनी जरूरतों को पूरा एवं अनुकूलित करने की प्रणाली ही जुगाड़ है । उदाहरण के द्वारा स्पष्ट रूप से मानसकिता के आधार पर जुगाड़ तंत्र को सकारात्मक या नकारात्मक नवाचार में वर्गीकृत किया जा सकता है ।

ग्रामीण समाज में बांस या पुरानी पाइप से सिंचाई – प्रणाली का उपयोग, पुराने तथा खराब ट्रेक्टरों के टायरों से खेतों में बांध का प्रबंध करना, बैलगाडी में पुराने टायरों को लगाकर तीव्रता प्रदान करना, मोटर साइकिल के इंजन के साथ लकड़ी के तख्तों को जोड़कर तीव्रगति से चलने वाली जुगाड़–गाड़ी का निर्माण, मोटरसाइकिल के पिछले चक्कों के दोनों तरफ लोहे के बड़े कंटेनरों में दूध भरकर ग्वाले द्वारा गांव से शहर तक सस्ते लागत में दूध उपलब्ध कराने का

जुगाड़, मिट्टी अनुकूलित रेफ्रिजरेटर का इस्तेमाल, पुराने टायरों ,कुर्सियों ,प्लास्टिक कंटेनरों ,डिब्बों का इस्तेमाल कर सामूहिक पार्कों में बच्चों के लिए क्रीडा क्षेत्र तथा बुजर्गों के बैठने का साधन जुगाड़ इत्यदि अनेक उदाहरण है जो सीमित संसाधनों, बेकार पड़े सामानों उपकरणों के उपयोग द्वारा सकारात्मक मानसिकता वाले जुगाड़ तंत्र को परिभाषित करते हैं। कभी–कभी जुगाड़ तकनीक का इस्तेमाल त्वरित लाभ की चाहत में अपनी वैध अथवा कानूनी नियम की परिधि के बाहर चला जाता है। सीमित संसाधनों में लालफीताशाही एवं कानूनी विधि–विधानों से बचने के प्रयास में लोग अनैतिक एवं गैर–कानूनी माध्यमों से जुगाड़ कर लेते है जो जाने–अनजाने हमारे समाज एवं पर्यावरण को बड़ा नुकसान भी पहुंचा देते है ।

उदाहरण के तौर पर बिजली के तारों में हुक लगाकर बिना मीटर के बिजली का उपयोग करना, फेज की अदला–बदली करना, रीडिंग कम करने के लिए मीटर के साथ छेड़–छाड करना, बिना अनुमति के सिंचाई के नलकूपों में अवैध कनेक्शन स्थापित करना, नदियों से रेत, बालू एवं बजरी का अवैध खनन तथा कालाबाजारी करना, जंगलों से बहुमूल्य पेड़ो का अवैध कटान , खेती में उर्वरकों ,कीटनाशकों तथा रसायनों का निर्धारित मात्रा से अधिक प्रयोग करना जिससे मिट्टी तथा पानी दोनों दूषित होते है एवं मानव–जीवन हेतु खतरे की घंटी बन जाते हैं। यातायात के वाहनों में ओवरलोडिंग,अवैध लाइसेंस,सरकारी जमींन पर अवैध कब्जा, झुग्गियां बसाना ,दुकानें खोलना, दूध, तेल, मसालों की मात्रा बढ़ाने के लिए मिलावट का जुगाड़, मोबाइल नेटवर्क से छेड़छाड़ कर फ्री डाटा एवं कालिंग का उपयोग करना आदि नकारात्मक जुगाड़ की मानसकिता को परिभाषित करता है ।

इसके अलावा स्कूलों, कॉलेजों, औद्योगिक संस्थानों, अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में, कार्यालयों में भी जल्द तरक्की पाने, खेलों में सफलता पाने, मनचाहा पद पाने अथवा स्थान प्राप्त करने की चाहत में 'जुगाड़' की नकारात्मक मानसकिता से ग्रसित लोग योग्य, अनुभवी, श्रेष्ठ, क्षमतावान मानव–संसाधनों को दरकिनार कर मनवांछित सुविधा का लाभ प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं। यह नकरात्मक जुगाड़ तंत्र हमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में पिछड़ा बना देता है ।

उपरोक्त वर्णित उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि जुगाड़ तंत्र सकारात्मक भावना का रचनात्मक समाधान है न कि अवैध तथा गैर–कानूनी तरीके से त्वरित लाभ प्राप्त करना। ये अवैध व्यवस्था तत्काल एवं अल्पकालिक लाभ तो अवश्य प्रदान करते हैं, लेकिन कालांतर में हमारे समाज, जीवन, सभ्यता एवं संस्कृति सभी को नुकसान पंहुचाते है। निष्कर्षतः जुगाड़ तंत्र या अपरंपरागत नवाचार को सकरात्मक भावना से कानूनी एवं नैतिक सीमाओं के भीतर ही रहना चाहिए । इसलिए कहते हैं कि "सफलता पाने का कोई शार्टकट नहीं होता है "।

हिन्दी पखवाड़ा 2024 झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह के दौरान प्रधान निदेशक का सम्बोधन

ऑडिट दिवस 2024

कार्यालय में आयोजित सुखमणी साहिब पाठ के छायाचित्र

प्रयागराज महाकुंभ 2025

श्री विजय कुमार अधलखा ,स.ले.प.अ.
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

"चला पवन का रेला ,फिर आया कुंभ का मेला "प्राचीन भारतीय परम्पराओं में ग्रह, नक्षत्रों की दिशा के अनुसार ही त्योहार, व्रत तथा मेलों का आयोजन होता आया है। कुम्भ मेला भारत में आयोजित होने वाला एक विशाल मेला है, जिसमें करोड़ों श्रद्धालु हर बारहवें वर्ष प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में से किसी एक स्थान पर एकत्र होते हैं और नदी में पवित्र स्नान करते हैं।

ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार यह मेला पौष पूर्णिमा के दिन आरंभ होता है और मकर संक्रान्ति इसका विशेष ज्योतिषीय पर्व होता है, जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करते हैं। मकर संक्रान्ति को होने वाले इस योग को ''कुम्भ स्नान–योग'' कहते हैं और इस दिन को विशेष मंगलकारी माना जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इस दिन पृथ्वी से उच्च लोकों के द्वार खुलते हैं और इस प्रकार इस दिन स्नान करने से आत्मा को उच्च लोकों की प्राप्ति सहजता से हो जाती है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग दर्शन माना जाता है।'कुम्भ' का शाब्दिक अर्थ संस्कृत में 'घड़ा' या 'कलश' होता है जो पानी रखने के बर्तन में रूप में प्रयोग होता है। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार यह अमृत से भरे घड़े का प्रतीक है। मेला शब्द का अर्थ है, किसी एक स्थान पर मिलना, एक साथ चलना, सभा में या फिर विशेष रूप से सामुदायिक उत्सव में उपस्थित होना। यह शब्द ऋग्वेद और अन्य प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों में भी पाया जाता है। इस प्रकार, कुम्भ मेले का अर्थ है "अमरत्व का मेला"।

पौराणिक विश्वास जो कुछ भी हो, ज्योतिषियों के अनुसार कुम्भ का असाधारण महत्व तब होता है जब बृहस्पति कुम्भ राशि में प्रवेश तथा सूर्य मेष राशि में संक्रमण करता है। ग्रहों की स्थिति हरिद्वार से बहती गंगा के किनारे पर स्थित हर की पौड़ी स्थान पर गंगा नदी के जल को औषधिकृत करती है तथा उन दिनों यह अमृतमय हो जाती है। यही कारण है कि अपनी अन्तरात्मा की शुद्धि हेतु पवित्र स्नान करने लाखों श्रद्धालु यहाँ आते हैं। कुम्भ पर्व के आयोजन को लेकर दो–तीन पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव–दानवों द्वारा समुद्र मन्थन से प्राप्त अमृत कुम्भ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। इस कथा के अनुसार महर्षि दुर्वासा के श्राप के कारण जब इन्द्र और अन्य देवता कमजोर हो गए तो दैत्यों ने देवताओं पर आक्रमण कर उन्हें परास्त कर दिया, तब सब देवता मिलकर भगवान विष्णु के पास गए और उन्हे सारा वृतान्त सुनाया। भगवान विष्णु ने उन्हे दैत्यों के साथ मिलकर क्षीरसागर का मन्थन करके अमृत निकालने की सलाह दी। भगवान विष्णु के ऐसा कहने पर सम्पूर्ण देवता दैत्यों के साथ सन्धि

करके अमृत निकालने के यत्न में लग गए। अमृत कुम्भ के निकलते ही अमृत कलश पर अधिकार जमाने के लिए देव–दानवों में बारह दिन तक अविराम युद्ध होता रहा।

इस परस्पर मारकाट के दौरान पृथ्वी के चार स्थानों (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कलश से अमृत बूँदें गिरी थीं। कलह शान्त करने के लिए भगवान विष्णु ने मोहिनी रूप धारण कर यथाधिकार देवताओं को अमृत बाँटकर पिला दिया। देवताओं के बारह दिन मनुष्यों के बारह वर्ष के तुल्य होते हैं। अतएव कुम्भ भी बारह होते हैं। उनमें से चार कुम्भ पृथ्वी पर होते हैं और शेष आठ कुम्भ देवलोक में होते हैं, जिन्हें देवगण ही प्राप्त कर सकते हैं, मनुष्यों की वहाँ पहुँच नहीं। कुंभ मेले का आयोजन बृहस्पति और सूर्य की विशेष खगोलीय स्थिति के आधार पर होता है उसी वर्ष के उसी राशि योग में जहां–जहां अमृत की बूंद गिरी थी वहां–वहां पर कुंभ पर्व होता है। जब बृहस्पति कुंभ राशि में प्रवेश करते हैं और सूर्य मकर राशि में होता है तब प्रयागराज में कुंभ का मेला आयोजित किया जाता है। जब बृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में होता है तो हरिद्वार में कुंभ का मेला लगता है। जब सूर्य मेष राशि में और बृहस्पति सिंह राशि में होता है तो उज्जैन में कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। जब बृहस्पति और सूर्य दोनों सिंह राशि में होते हैं तो नासिक में कुंभ मेला लगता है।

जनवरी 2025 में यह संयोग पूरे 144 वर्षों के बाद बना एवं महाकुम्भ का आयोजन प्रयागराज में हुआ। 2025 में मकर सक्रांति के पावन अवसर पर जब सूर्य ने मकर राशि में प्रवेश किया तो प्रयागराज में भारी जनसैलाब उमड़ा। पौष पूर्णिमा के स्नान के साथ श्रध्दालुओं ने कल्पवास शुरू किया। लगभग दस लाख श्रद्धालुओं के साथ कल्पवास शुरू हुआ जो 12 फरवरी 2025 को माघ पूर्णिमा के साथ समाप्त हुआ। दिनांक 14.01.25 को सबसे पहले रथ पर सवार होकर महानिर्वाणी अखाड़े के नागा सन्यासी और महामंडलेश्वर अमृत स्नान के लिए पहुंचे। बाद में भस्म से लिपटे अटल अखाड़े के नागा तलवार, भालों के साथ जयकार लगाते हुए दिखे एवं अंत में विभिन्न अखाड़ों के संतो ने स्नान किया। सबसे बड़ा अखाडा होने के कारण जूना अखाड़े को अधिक समय मिला। प्रथम स्नान पर 3.5 करोड़ श्रध्दालुओं ने डुबकी लगाई ।

हिमालय की पवित्र कंदराओं, मठों एवं मंदिरों में रहने वाले धर्म रक्षक नागा साधुओं ने गंगा स्नान का आनन्द लिया साधना में लीन रहने वाली महिला नागा सन्यासी भी भारी संख्या में इसमें सम्मिलित हुई। महाकुंभ का अंतिम स्नान 26.02.2025 को शिवरात्रि के पावन पर्व के साथ संपन्न हुआ। प्रशासन के द्वारा चालीस हजार से अधिक पुलिसकर्मी तैनात किए गए थे एवं 2700 सी.सी.टी.वी. कैमरों एवं आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस से महाकुंभ मेला क्षेत्र की निगरानी की व्यवस्था की गई ।

अनेक धार्मिक तथा सामाजिक संस्थाओं ने भी महाकुंभ में जनकल्याण हेतु निःशुल्क सेवाएँ प्रदान की। मेले का मुख्य आकर्षण कलाग्राम था, जिसमें विभिन्न राज्यों से आए हुए शिल्पकारों ने अपनी–अपनी कला–कृतियों का प्रदर्शन किया। महाकुंभ का यह ऐसा पावन पर्व था जिसमें 66 करोड़ से ज्यादा लोगों ने प्रयागराज में पधारकर अपने तन–मन एवं धन को पवित्र किया। इसमें विश्व के सबसे विशाल मेले के आयोजन का रिकॉर्ड भी कायम हुआ। भारत ही नहीं विदेशों से आए हुए लाखों श्रद्धालुओं ने त्रिवेणी के पावन तट पर अध्यात्म के बल पर अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित करने का शुभ संकल्प लिया।

माता-पिता की सेवा : एक परम कर्तव्य

श्री यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

माता–पिता इस संसार में हमारे पहले गुरु, मार्गदर्शक और रक्षक होते हैं। वे न केवल हमें जन्म देते हैं बल्कि कठिन परिस्थितियों में अपने सुखों का त्याग करके हमें पालते–पोसते हैं, शिक्षित करते हैं और जीवन के हर मोड़ पर हमारा साथ देते हैं। इसलिए माता–पिता की सेवा करना ना केवल एक नैतिक दायित्व है बल्कि एक महान संस्कार और धर्म भी है।

भारतीय संस्कृति में माता–पिता को ईश्वर के समान माना गया है। हमारे धर्मग्रंथों में कहा गया है "मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः" अर्थात् माता और पिता देवता के समान हैं। वे हमारे जीवन की नींव हैं। रामायण, महाभारत और अन्य ग्रंथों में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ संतान ने माता–पिता की आज्ञा का पालन कर अपना जीवन समर्पित कर दिया। भगवान श्रीराम ने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिए 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया। श्रवण कुमार ने अपने अंधे माता–पिता को कंधे पर उठाकर तीर्थ यात्रा कराई। ये उदाहरण आज भी हमें सिखाते हैं कि माता–पिता की सेवा में ही असली धर्म और पुण्य है।

माता–पिता जब वृद्ध हो जाते हैं तब उन्हें हमारे सहारे की सबसे ज्यादा जरूरत होती है। उनके शरीर में पहले जैसी शक्ति नहीं रहती लेकिन उनका स्नेह और अनुभव तब भी अमूल्य होता है। ऐसे समय में यदि हम उनकी सेवा करते हैं तो न केवल हम उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं बल्कि समाज के सामने एक आदर्श भी प्रस्तुत करते हैं। सेवा का अर्थ केवल शारीरिक देखभाल ही नहीं है बल्कि उन्हें समय देना, सम्मान देना, उनकी भावनाओं की कद्र करना और मानसिक रूप से उन्हें स्नेह देना भी है।

आज के समय में जब परिवार छोटे होते जा रहे हैं और जीवन की दौड़ में लोग व्यस्त हो गए हैं तब माता–पिता अकेलेपन और उपेक्षा के शिकार हो जाते हैं। कुछ बच्चे अपने माता–पिता को बोझ समझने लगते हैं जो कि अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जो आज हम अपने माता–पिता के साथ करेंगे वही भविष्य में हमारी संताने हमारे साथ करेंगी। माता–पिता की सेवा करना एक महान कार्य है जो न केवल हमें आत्मिक शांति देता है बल्कि जीवन में सफलता और समृद्धि भी लाता है। उनका आशीर्वाद किसी वरदान से कम नहीं होता। इसलिए हमें अपने माता–पिता का सदा आदर करना चाहिए उनके साथ प्रेम और सम्मान से पेश आना चाहिए और उनके बुढ़ापे में उनकी सेवा करना हमारा प्रथम धर्म होना चाहिए।

"जिन्होंने हमें चलना सिखाया उन्हें बुढ़ापे में अकेला छोड़ देना सबसे बड़ा अपराध है।"

सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमयः पिता। मातरं पितरं तस्मात् सर्वयत्नेन पूजयेत्।''

इसका अर्थ है ''माता सभी तीर्थों के समान है और पिता सभी देवताओं के समान हैं। इसलिए माता–पिता की हर संभव तरीके से पूजा करनी चाहिए।''

शिक्षा का महत्व

श्री रामपाल मौर्या, लेखापरीक्षक

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

मनुष्य की खासियत है कि वह ज्ञान की तलाश करता है और नए अनुभवों को प्राप्त करने की इच्छा रखता है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान प्राप्ति है। इसमें न केवल एक व्यक्ति के लिए ज्ञानार्जन का आधार साधन है बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय स्तर पर विकास का माध्यम भी है।

शिक्षा क्या है? शिक्षा व्यापक रूप से मानव समाज के विकास और प्रगति का महत्वपूर्ण कारक है। ''शिक्षा'' शब्द संस्कृत भाषा के ''शिक्ष''धातु से निकला है जिसका अर्थ है ''सीखना या सिखाना ''। जब हम 'शिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ते हैं तो यह 'शिक्षा' बन जाता है जिसका अर्थ है सीखने एवं सिखाने की प्रक्रिया ।

शिक्षा एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो मनुष्य के जीवन में ज्ञान और बुद्धिमत्ता का विकास करती है। इसके माध्यम से हम अपने ज्ञान को बढ़ाते हैं और नई जानकारी को आवश्यक और उपयोगी तरीके से प्राप्त करते हैं। शिक्षा व्यक्ति को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में योग्यता और कौशल प्रदान करती है। इसके द्वारा व्यक्ति मनोवैज्ञानिक विकास, भावनात्मक समझ, समाजसेवा की भावना, व्यक्तिगत उत्थान और आर्थिक स्वावलंबन का मार्ग तय करता है।

शिक्षा का आदान–प्रदान विभिन्न माध्यमों जैसे कि स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और विभिन्न शैक्षिणिक संस्थानों आदि द्वारा हो सकता है। शिक्षा मानव समाज के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल ज्ञानार्जन का साधन है बल्कि यह समाज में न्याय एवं समानता को प्राप्त करने का माध्यम भी है। शिक्षित लोग समाज में सक्रिय भूमिका निभाते हैं और प्रेम एवं सदभाव की स्थापना करते हैं। शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है उसे सही नीतियों, मूल्यों और संस्कृति का ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा उन गुणों का विकास करती है जो एक व्यक्ति को समाज में सफल बनाते हैं जैसे कि बुद्धिमत्ता, सहजता, विचारशीलता, सहनशीलता और संगठन क्षमता।

शिक्षा के विभिन्न प्रकार हैं जैसे कि मौलिक शिक्षा, मानविकी, साहित्यिक शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा, गणित शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा। शिक्षा द्वारा हम विभिन्न विषयों में ज्ञान प्राप्त करते हैं जो हमारे मनोवैज्ञानिक, तकनीकी,

वैज्ञानिक, साहित्यिक और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक हैं। यह हमें स्वयं को सुसज्जित करने की क्षमता प्रदान करता है और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने में मदद करता है। शिक्षा हमारे व्यक्तिगत कौशल, योग्यताओं और स्वभाव को सुधारने में मदद करती है। यह हमारी सोचने की क्षमता एवं समस्याओं का समाधान करने की क्षमता और स्वतंत्रता के साथ नए और आविष्कारी विचारों का विकास करती है। शिक्षा हमें सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता प्रदान करती है और सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए कर्मठता व योग्यताओं का विकास करती है। यह हमें एक न्यायसंगत और समरस समाज के निर्माण में सहयोग करने की प्रेरणा देती है।

शिक्षा हमें आर्थिक स्वावलंबन के मार्ग पर ले जाती है। शिक्षित व्यक्ति को अधिक रोजगार के अवसर, उच्चतम वेतन और आर्थिक स्थिरता का लाभ मिलता है। इसके अलावा शिक्षा हमें उच्चतम स्तर की जीवन गुणवत्ता की प्राप्ति के लिए भी तैयार करती है। शिक्षा हमें विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और सम्प्रदायों की समझ प्रदान करती है और सामान्य संस्कृति को प्रचारित करती है। यह हमारे बीच सदभाव, तालमेल और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करने में मदद करती है।

शिक्षा के माध्यम से हम समृद्ध, समरस और प्रगतिशील समाज का निर्माण कर सकते हैं। यह हमारे व्यक्तित्व का विकास करता है और हमें आदर्श नागरिक बनाने में अहम भूमिका निभाती है।

विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति, धनात् धर्मं ततः सुखम्।।

यह श्लोक शिक्षा के महत्व को दर्शाता है। इसका अर्थ हैः "विद्या विनय (विनम्रता) देती है, विनय से पात्रता (योग्यता) आती है, पात्रता से धन प्राप्त होता है और धन से धर्म और धर्म से सुख की प्राप्ति होती है।"

नीम

श्री सुदेश कुमार, सहायक पर्यवेक्षक

का. महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब

नीम भारतीय मूल का वृक्ष है। यह सदियों से समीपवर्ती देशों पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यांमार, थाईलैंड, इंडोनेशिया एवं श्रीलंका आदि देशों में पाया जाता है। इसका उपयोग पारंपरिक चिकित्सा, कीटनाशक और लकड़ी के लिए किया जाता है। नीम आमतौर पर बीज से उगाया जाता है लेकिन उसे कलमों या जड के रेशों से भी उगाया जा सकता है। यह पौधा कठोर और लचीला होता है और पथरीली मिट्टी में भी अच्छी तरह उगता है। नीम कई तरह की पर्यावरण परिस्थितियों को सहन कर लेता है लेकिन यह ठंडे इलाके में और जहां जलभराव होता है वहां जीवित नहीं रह सकता ।

सदियों से नीम का पेड़ भारत और एशिया दोनों में स्वास्थ्य एवं संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है। नीम का पेड़ प्रकृति के सबसे बहुमुखी पौधों में से एक है और यह अपने अत्यधिक प्रभावी कीटनाशक तेल के लिए जाना जाता है । नीम को कड़वा रत्न भी कहा जाता है। इसके पत्तों, छाल और बीजो में औषधीय गुण पाए जाते हैं। नीम की पत्तियों का उपयोग त्वचा रोगों, बुखार और पाचन संबंधी समस्याओं के लिए किया जाता है। नीम की दातुन (टहनी) का उपयोग दांतो और मसूड़ों को स्वस्थ रखने के लिए किया जाता है। नीम के तेल का उपयोग त्वचा की समस्याओं जैसा कि मुहासों और खुजली के लिए किया जाता है। नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर नहाने से त्वचा रोग ठीक होते हैं। नीम के बीज और पत्तो का उपयोग कीटनाशक के रूप में भी किया जाता है।

नीम का पेड़ पर्यावरण को शुद्ध करने और वायु प्रदूषण को कम करने में भी मदद करता है। नीम की पत्तियां, छाल, फल और बीज सभी का उपयोग विभिन्न प्रकार की बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। यह ध्यान रखना चाहिए कि नीम का उपयोग करने से पहले किसी डॉक्टर या आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह अवश्य ले लेनी चाहिए।

जीवन में खेलों का महत्व

श्री आमोद दीक्षित,स.ले.प.अ.

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केन्द्रीय) चंडीगढ़

खेल मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं। ये केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास, मानसिक संतुलन और सामाजिक एकता का मजबूत आधार भी हैं। जीवन में खेलों का महत्व न केवल बच्चों के लिए, बल्कि हर आयु वर्ग के लोगों के लिए होता है। खेल हमारे जीवन को अनुशासित, ऊर्जावान और उद्देश्यपूर्ण बनाते हैं।

1. शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी

खेल खेलने से शरीर सक्रिय रहता है। दौड़ना, कूदना, गेंद खेलना या कोई भी खेल गतिविधि शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक होती है। यह मोटापा, हृदय रोग, मधुमेह जैसी कई बीमारियों से बचाव करती है। एक सक्रिय शरीर ही एक सक्रिय मस्तिष्क को जन्म देता है।

2. मानसिक विकास में सहायक

खेल न केवल शरीर को, बल्कि मस्तिष्क को भी सक्रिय रखते हैं। टीम खेल जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी आदि में रणनीति बनानी होती है, जो मानसिक तीव्रता को बढ़ाती है। साथ ही, हार–जीत को स्वीकार करना, धैर्य रखना और प्रतिस्पर्धा में संतुलन बनाए रखना मानसिक मजबूती की निशानी है।

3. अनुशासन और नेतृत्व का विकास

खेलों से व्यक्ति में अनुशासन की भावना विकसित होती है। समय पर अभ्यास करना, नियमों का पालन करना और टीम के साथ तालमेल बनाना – ये सभी गुण जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफलता के लिए आवश्यक हैं। इसके अलावा, खेल नेतृत्व गुण भी पैदा करते हैं, जिससे व्यक्ति समाज और राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकता है

4. सामाजिक समरसता और सहयोग की भावना

खेल सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं। विभिन्न पृष्ठभूमि, धर्म और जातियों के लोग जब एक टीम के रूप में खेलते हैं, तो उनमें आपसी समझ और सहयोग की भावना बढ़ती है। इससे सामाजिक एकता मजबूत होती है।

5. करियर के अवसर

आज खेल केवल शौक नहीं, एक उज्ज्वल करियर विकल्प भी है। क्रिकेट, बैडमिंटन, टेनिस, हॉकी, कुश्ती जैसे खेलों में युवाओं के लिए रोजगार और पहचान के अनेक अवसर मौजूद हैं। ओलंपिक और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेकर देश का नाम रोशन किया जा सकता है।

खेल जीवन का आवश्यक हिस्सा हैं। ये न केवल शरीर और मस्तिष्क को सशक्त बनाते हैं बल्कि व्यक्तित्व विकास, सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय गौरव का माध्यम भी हैं। आज के डिजिटल युग में जहाँ बच्चे मोबाइल और टीवी में उलझे रहते हैं, वहाँ खेलों को जीवन में शामिल करना और भी जरूरी हो गया है।

उपरोक्त फायदों के अलावा खेल न केवल व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका अदा करते है अपितु किसी राष्ट्र के विकासशील से विकसित बनने में भी खेलों का विशेष योगदान रहता है। इसका एक सटीक उदाहरण (The Hindu) नामक समाचार पत्र में प्रकाशित एक लेख के अवलोकन से किया जा सकता है। इस लेख में चीन राष्ट्र के विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने तक की यात्रा को ओलिंपिक खेलों में चीन के बढ़ते वर्चस्व को जोड़ कर बताया गया है। इसमें बताया गया है कि जैसे–जैसे चीन के मैडल ओलंपिक खेलों में बढ़े वैसे–वैसे उसकी अर्थव्यवस्था की विकास दर (GDP Growth) में भी समांतर वृद्धि हुई। कुछ ऐसा मंजर अब भारत में भी विगत कुछ वर्षों से देखने को मिल रहा है। भारत भी अब कई अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में विभिन्न खेलों में विश्वस्तरीय प्रदर्शन कर रहा है एवं उसकी अर्थव्यवस्था भी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है ।

अतः खेलों का न केवल किसी व्यक्ति विशेष के विकास में बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के विकास में भी एक महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए, ''पढ़ाई के साथ खेल भी जरूरी है'' यह केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि एक संतुलित जीवन की कुंजी है।

पंख

श्री मुनीष भाटिया,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), चंडीगढ़

छाया बचपन से ही सपनों को आसमान की तरह बड़ा मानती थी। उसका मानना था कि इंसान अगर ठान ले तो किसी भी ऊंचाई को छू सकता है लेकिन वो यह भी जानती थी कि सपनों का बोझ गरीब कंधों पर अक्सर भारी पड़ता है। उसका परिवार छोटा था मॉं, पापा और वो खुद। वे एक छोटे से कस्बे में रहते थे जहाँ जिंदगी की रफ्तार धीमी पर संघर्ष की तीव्रता तीखी होती है।

छाया के पापा रमेश जी कपड़ों की फेरी लगाते थे। सुबह–सुबह अपनी पुरानी साइकिल उठाकर घर से निकल जाते और देर शाम लौटते पसीने से तर–बतर धूप से झुलसा चेहरा लिए। उस साइकिल की घंटी घर के आँगन में जैसे किसी प्रतीक्षा की आवाज बन चुकी थी। रमेश जी बहुत कम बोलते थे। ना ज्यादा डांटते न दुलार जताते। उनकी उपस्थिति एक गूंगी मगर मजबूत दीवार जैसी थी जो सब सहती है लेकिन कभी कुछ कहती नहीं। छाया उन्हें कभी ठीक से समझ नहीं पाई। माँ अक्सर कहती थीं "तेरे पापा बहुत गहरे समंदर हैं बेटा जितना देखती है उससे कहीं ज्यादा छुपा है उनके भीतर।"

छाया पढ़ाई में तेज थी। उसका सपना था कि वो एक दिन अपने परिवार के हालातों को बदल दे। उसने मेहनत की और शहर के सबसे अच्छे कॉलेज में दाखिला पा लिया लेकिन कॉलेज घर से दस किलोमीटर की दूरी पर था था। रोज आना–जाना पैदल मुमकिन नहीं था। छाया ने माँ से साइकिल के लिए कहा। माँ ने धीरे से कहा "तेरे पापा बहुत परेशान रहते है समय आने पर सब होगा।"

छाया ने उस जवाब में 'ना' को पहचान लिया। उसे पता था कि ये 'समय आने पर' शायद कभी नहीं आएगा। कुछ दिन बीते एक सुबह जब वह तैयार होकर कॉलेज जाने को निकली तो देखा पापा अपनी पुरानी साइकिल को साफ कर रहे हैं। उन्होंने कुछ नहीं कहा बस साइकिल उसकी ओर बढ़ा दी और बोले "अब मुझे इसकी जरूरत नहीं।"

छाया कुछ कह नहीं पाई। उसके गले में कुछ अटका रहा। साइकिल लेकर कॉलेज जाना शुरू हो गया लेकिन उस साइकिल की हर चेन में हर पहिये में पापा की खामोशी गूंजती रही। कॉलेज के दिन बीतते गए। वह अच्छे नंबर लाने लगी और शिक्षक उसकी तारीफ करते पर मन में पापा की उदासी और चुप्पी एक अजीब सी टीस छोड़ जाती।

एक दिन एक क्लासमेट ने यूँ ही पूछ लिया "तुम्हारे पापा को रोज पैदल फेरी लगाते देखा है वो अब साइकिल से

क्यों नहीं आते?"

उस एक सवाल ने जैसे छाया की पूरी दुनिया को झकझोर दिया। वो दौड़ती हुई घर पहुँची। माँ से पूछा "पापा पैदल क्यूँ फेरी लगाते हैं?" माँ की आँखों से आँसू बहने लगे "तेरी पढ़ाई रुक न जाए, इसलिए बेटा वो नहीं चाहते थे कि तू थके हारे या पिछड़े। अपने पैरों से चलने का बोझ उन्होंने खुद उठा लिया।" उस रात छाया रोती रही। वो सारी छोटी–छोटी ख्वाहिशें जो उसे अधूरी लगती थी अब पापा की खामोश कुर्बानियों के रूप में पूरी नजर आ रही थीं।

कुछ हफ्तों बाद कॉलेज में एक स्कॉलरशिप का नोटिस आया अंतरराज्यीय मेरिट स्कॉलरशिप। दिल्ली के एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में चयन का मौका। फीस पूरी माफ छात्रावास में रहना भी शामिल। छाया ने आवेदन कर दिया। कुछ ही हफ्तों में चयन की सूचना आ गई। वो दिल्ली जा सकती थी एक नई दुनिया नए सपने और नई ऊंचाइयों के लिए। लेकिन अब सबसे कठिन काम था यह बात पापा को बताना।

उस रात छाया काफी देर तक सोचती रही। फिर हिम्मत जुटाकर पापा के पास गई और धीरे–धीरे सब कुछ बता दिया। पापा चुपचाप सुनते रहे। चेहरा बिल्कुल शांत। कोई सवाल नहीं, कोई प्रतिक्रिया नहीं।

छाया को लगा कि उन्हें फर्क नहीं पड़ा। शायद उन्हें अच्छा नहीं लगा कि वो इतनी दूर जा रही है। वो चुपचाप अपने कमरे में भारी मन के साथ लौट गई।

सुबह जब उसकी आँख खुली तो देखा सिरहाने एक ट्रॉली बैग रखा था। उसके ऊपर पापा की वही पुरानी घिसी हुई टोपी और टोपी के नीचे एक चिट्ठी:

"बिटिया, मैंने तुझे कभी गोद में बिठाकर आसमान नहीं दिखाया पर आज तू उड़ने को तैयार है तो मैं अपनी जमीन तेरे पंखों के नीचे बिछा रहा हूँ। साइकिल तुझे दी पर तेरे हौसले मुझे मिल गए। मेरे पास कहने को शब्द नहीं पर तू जब भी जीत कर लौटे तो वो मुस्कान जरूर लाना जो तू कॉलेज से लौटते वक्त मेरे चेहरे पर देखती थी।

तेरा पिता, रमेश"

छाया की आँखों से आँसू बह निकले। वो चिट्ठी नहीं जैसे एक उम्र भर की खामोशी का इजहार था। पापा की हर चुप्पी, हर त्याग और हर रात की थकान सब उस एक पन्ने में बोल उठे थे।

आज छाया दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर है। उसका कमरा पुरस्कारों से भरा है बेस्ट रिसर्चर, यंग एजुकेटर, वुमन लीडर अवॉर्ड। लेकिन जब भी वह किसी मंच पर खड़ी होती है एक तस्वीर उसके बैग में जरूर रहती है एक पुरानी जंग लगी साइकिल की तस्वीर।

वो जब भी कोई अवॉर्ड लेती है मुस्कराते हुए कहती है: "ये मेरा पहला पंख था मेरे पापा का दिया हुआ।"

रमेश जी अब इस दुनिया में नहीं हैं। उनका देहांत छाया की डॉक्टरेट पूरी होने से कुछ महीने पहले हो गया था लेकिन छाया जब भी कोई नई लड़की को उसके सपने की ओर बढ़ते देखती है, तो उसे लगता है पापा अब भी वहीं हैं। साइकिल के हैंडल पर अपनी हथेली रखे दूर कहीं खड़े धीरे–धीरे मुस्करा रहे हैं।

वसंत पंचमी : सरस्वती पूजा का महत्व

श्री आशीष कुमार ,स.ले.प.अ.
का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

वसंत पंचमी के दिन सरस्वती पूजा का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण त्यौहार है जो विद्या, संगीत तथा कला की देवी सरस्वती की पूजा के रूप में मनाया जाता है। यह त्यौहार मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं झारखंड में परंपरागत तरीके से मनाया जाता है। पौराणिक तथा आध्यात्मिक महत्व के इस त्यौहार का इतिहास स्कंद पुराण' से जुड़ा है जिसके अनुसार ब्रह्मा द्वारा सृष्टि की रचना हेतु ज्ञान एवं वाणी की अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति हेतु अपने मन से माता सरस्वती को प्रकट किया गया। इसी कारण 'सरस्वती' को ब्रह्मा की "मानस पुत्री" भी कहा जाता है। देवी सरस्वती को त्रिदेवियों (लक्ष्मी, पार्वती, सरस्वती) में विद्या की अधिष्ठात्री देवी के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

देवी सरस्वती का पूजन प्राचीन पौराणिक काल से वसंत पंचमी के दिन किया जाता है, जो कि बसंत ऋतु की शुरुआत एवं प्रकृति के नवीन जीवन तथा ज्ञान के प्रसार का प्रतीक माना जाता है। पुराणों के अनुसार इसी दिन देवी सरस्वती ने समस्त जन–मानस को वाणी, ज्ञान और संगीत का वरदान दिया। देवी सरस्वती के हाथों में पुस्तक (ज्ञान का प्रतीक) और वीणा (संगीत का प्रतीक) हैं। हंस वाहिनी होना देवी के विवेकशीलता और अज्ञानता को दूर करने की शक्ति को हमारे समक्ष दर्शाता है। सफेद रंग प्रकाश, ज्ञान एवं शुद्धता का प्रतीक हैं जो अज्ञानता के तिमिर को समाप्त करता है। पुराणों के वर्णन के अनुसार देवी सरस्वती की आराधना के बिना समस्त ज्ञान अधूरा है। वेद के अनुसार, उन्हें वाक् (वाणी) की स्वामिनी माना जाता है। देवताओं और असुरों द्वारा समुद्र मंथन के समय "अमृत कलश" की रक्षा में देवी सरस्वती की उल्लेखनीय भूमिका का वर्णन पुराणों में मिलता है।

आधुनिक काल में वसंत पंचमी की पूजा विशेष तौर पर स्कूलों एवं कॉलेजों में विद्यार्थियों एवं ज्ञानार्थियों द्वारा स्वयं की बुद्धि, ज्ञान और विवेक को बढ़ाने के लिए की जाती है। पूजा के दिन लोग पीले रंग के वस्त्रों से माँ सरस्वती की मूर्ति को सजाते हैं, पुष्पांजलि एवं फल अर्पण करते हैं तथा देवी से ज्ञान, विवेक, बुद्धि, वाणी एवं संगीत का वरदान मांगते है। माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी को पूरी श्रध्दा–भक्ति से भक्त –जन देवी सरस्वती की आराधना करते हैं। कलयुग में देवी की उपासना विशेष फलदायी है, यह मनुष्यों को सांसारिक एवं भौतिक बंधनों से मुक्ति प्रदान करती है आज के इस वैज्ञानिक एवं उपभोक्तावादी जीवन में देवी की उपासना से प्राप्त ज्ञान और विवेक ही एकमात्र ऐसा धन है जिसे कोई भी आपसे छीन नहीं सकता है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार विद्या ही सच्चा धन है जो मानव को अज्ञानता और अंधविश्वास से मुक्ति दिलाने में सक्षम है। वसंत पंचमी के दिन देवी सरस्वती की आराधना अत्यंत मंगलदायक एवं फलदायिनी मानी गयी है। ज्ञान प्राप्ति से ही जन–मानस का कल्याण संभव है ।

बरसात के दिनों में हिमाचल की चुनौतियाँ और समाधान

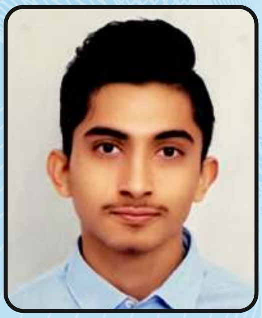

श्री रोहित राणा सुपुत्र श्री यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक
का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चड़ीगढ़

हिमाचल प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुंदरता हरे–भरे जंगलों, पहाड़ों और शीतल जलवायु के लिए जाना जाता है। लेकिन बरसात के मौसम में यहाँ की सुंदरता के साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। जून से सितंबर तक चलने वाली मानसूनी बारिश जहाँ खेतों के लिए जीवनदायिनी होती है वहीं यह पहाड़ी क्षेत्रों में लोगों के लिए परेशानी का कारण भी बन जाती है।

सबसे गंभीर समस्या है भूस्खलन। अधिक वर्षा के कारण मिट्टी ढीली हो जाती है और चट्टानें खिसकने लगती हैं। इससे सड़कें बंद हो जाती हैं यात्रियों और स्थानीय लोगों का आवागमन बाधित होता है। कई बार यह दुर्घटनाओं का कारण भी बनती है। बरसात में सड़कों की हालत बेहद खराब हो जाती है। पानी भरने या भूस्खलन के कारण कई जगहों पर सड़कें टूट जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में तो कुछ स्थानों का संपर्क भी कट जाता है। यह स्थिति मरीजों, विद्यार्थियों और नौकरीपेशा लोगों के लिए बेहद कष्टकारी होती है।

बारिश के दौरान बिजली के खंभे गिरना, ट्रांसफॉर्मर खराब होना या तारों का टूटना आम बात है। इससे कई दिनों तक बिजली गुल रहती है। मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट सेवाओं पर भी असर पड़ता है। अत्यधिक वर्षा से खेतों में जलभराव हो जाता है, जिससे फसलें सड़ जाती हैं। इससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। बरसात के दिनों में जलजनित बीमारियाँ जैसे डायरिया, टायफाइड, डेंगू और मलेरिया आदि फैलने लगती हैं। साथ ही कीचड़ और गंदगी के कारण संक्रमण का खतरा भी बढ़ जाता है। वैज्ञानिक तकनीकों से पहाड़ी ढलानों को मजबूत किया जा सकता है। पौधारोपण को बढ़ावा देना चाहिए ताकि मिट्टी जमी रहे। पक्की और मजबूत सड़कों का निर्माण किया जाए जो बारिश में भी क्षतिग्रस्त न हों। वर्षा जल की निकासी के लिए नालियों की समुचित व्यवस्था की जाए।

इससे निपटने के लिए हर पंचायत द्वारा अपने स्तर पर आपदा राहत एवं आपदा प्रबंधन टीम तैयार की जानी चाहिए। साथ ही लोगों को आपातकालीन परिस्थितियों में क्या करना है इसकी ट्रेनिंग भी दी जानी चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को जरूरी दवाओं और डॉक्टरों से सुसज्जित किया जाए। मौसम की जानकारी देने वाले सिस्टम को गाँव–गाँव तक पहुँचाया जाए ताकि लोग समय रहते सतर्क हो सकें।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि बरसात हिमाचल के लिए वरदान भी है और चुनौती भी। प्राकृतिक आपदाओं को पूरी तरह रोकना संभव नहीं लेकिन उचित तैयारी, जागरूकता और तकनीकी उपायों से इन समस्याओं को काफी हद तक कम किया जा सकता है। यदि सरकार और आम जनता मिलकर प्रयास करें तो बरसात का मौसम हिमाचलवासियों के लिए केवल सुंदरता ही नहीं अपितु सुरक्षा और समृद्धि का प्रतीक भी बन सकता है।

ढाई अक्षर

सुश्री बलजिंदर कौर
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोए ,
ढाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पंडित होय,
ढाई अक्षर के ब्रह्मा और ढाई अक्षर की सृष्टि ,
ढाई अक्षर के विष्णु और ढाई अक्षर की लक्ष्मी।

ढाई अक्षर की दुर्गा,
और ढाई अक्षर की शक्ति ,
ढाई अक्षर की श्रद्धा,
और ढाई अक्षर की भक्ति ।

ढाई अक्षर की तुष्टि,
और ढाई अक्षर की इच्छा,
ढाई अक्षर का त्याग,
और ढाई अक्षर का ध्यान।

ढाई अक्षर का धर्म,
और ढाई अक्षर का कर्म ,
ढाई अक्षर का भाग्य,
और ढाई अक्षर की व्यथा।

ढाई अक्षर का ग्रन्थ,
और ढाई अक्षर का सन्त,
ढाई अक्षर का शब्द,
और ढाई अक्षर का अर्थ ।

ढाई अक्षर का सत्य,
और ढाई अक्षर की मिथ्या,
ढाई अक्षर की श्रुति,
और ढाई अक्षर की ध्वनि ।

ढाई अक्षर की अग्नि,
और ढाई अक्षर का कुण्ड,
ढाई अक्षर का मंत्र,
और ढाई अक्षर का यन्त्र ।

ढाई अक्षर के श्वास,
और ढाई अक्षर के प्राण,
ढाई अक्षर का जन्म,
ढाई अक्षर की मृत्यु।

ढाई अक्षर की अस्थि,
और ढाई अक्षर की अर्थी,
ढाई अक्षर का प्यार,
और ढाई अक्षर का युद्ध ।

ढाई अक्षर का मित्र
और ढाई अक्षर का शत्रु ,
ढाई अक्षर का प्रेम,
और ढाई अक्षर की घृणा।

जन्म से लेकर मृत्यु तक,
हम बंधे है ढाई अक्षर में,
है ढाई अक्षर ही वक्त में,
और ढाई अक्षर ही अन्त में,
समझ नहीं पाया कोई भी,
है रहस्य क्या ढाई अक्षर में।

जीवन में एक कदम का महत्व

श्री ओजस्व चौहान, पुत्र श्री दिलदार सिंह चौहान, लेखापरीक्षक
का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

आज की दुनिया में हम चारों तरफ आत्म–संदेहों से घिरे रहते हैं। मन में सवाल उठते हैं कि क्या होगा, क्या मिलेगा, क्या मैं सही कर रहा हूं? लेकिन आज के समय में सबसे जरूरी है आपके अंदर की वह इच्छा, वह आत्मविश्वास जो आपको पहला कदम उठाने की हिम्मत देता है, बिना परिणामों की चिंता किए। इस लेख में मैं अपनी एक ऐसी कहानी साझा कर रहा हूं, जिसने मुझे बहुत कुछ सिखाया और शायद आपको भी प्रेरित करे कि आप अपने मन की बात को हकीकत में बदलने के लिए वह पहला कदम उठाएं। जब आप कुछ करना चाहते हैं, तो बहाने नहीं चलते। जो आपके हाथ में है, उसे बदलने की कोशिश करें, और जो आपकी पहुंच से बाहर है, उसे छोड़ दें।

मेरी वायुसेना SSB साक्षात्कार की यात्राः

हिम्मत का वह पहला कदम मैंने दूसरी बार में नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए) की लिखित परीक्षा पास की थी। मुझे गांधीनगर के 3 AFSB (एयरफोर्स सिलेक्शन बोर्ड) में सर्विसेज सिलेक्शन बोर्ड (SSB) साक्षात्कार के लिए छठा कॉल लेटर मिला, क्योंकि मैंने सशस्त्र बलों में वायुसेना को चुना था। पिछले दो सालों से मैं जॉइंट एंट्रेंस एग्जामिनेशन (JEE) की तैयारी में इतना व्यस्त था कि मैं अपने पिछले पांच एसएसबी साक्षात्कारों जिनमें एक एनडीए और चार तकनीकी प्रवेश शामिल थे, में शामिल नहीं हो सका। JEE की परीक्षाएं खत्म होने के बाद मुझे SSB साक्षात्कार का कॉल लेटर मिला, जो 15 जुलाई से 19 जुलाई 2024 तक निर्धारित था। लेकिन तभी एक बड़ी मुश्किल सामने आई। मेरे JEE काउंसलिंग के लिए उसी दिन, 15 जुलाई को, दस्तावेज सत्यापन के लिए जाना था।

मैं परेशान हो गया। मन में ढेरों सवाल उठने लगे कि अब क्या करूं? क्या मैं SSB छोड़ दूं? लेकिन फिर मैंने सोचा कि मुझे वह करना चाहिए जो मेरे बस में है। मैंने पहले कॉलेज से संपर्क किया और दस्तावेज सत्यापन की तारीख बदलने की गुजारिश की, लेकिन उन्होंने इसके लिए मना कर दिया। मैंने हार नहीं मानी। मैंने SSB केंद्र से संपर्क किया और साक्षात्कार की तारीख बदलने की कोशिश की। मुझे नहीं पता था कि ऐसा संभव है, लेकिन जब मैंने कोशिश की, तो उन्होंने मुझे स्वीकृति दे दी और साक्षात्कार की तारीख 29 जुलाई से 2 अगस्त 2024 तक कर दी। यह मेरी छोटी सी जीत थी, जिसने मुझे सिखाया कि कोशिश करने से रास्ते खुल सकते हैं, भले ही आपको लगे कि कोई रास्ता नहीं है।

यात्रा की शुरुआत

इस जीत ने मुझे नया जोश दिया। मैंने पूरी ताकत से SSB की तैयारी शुरू की। ऑनलाइन वीडियो और संसाधनों की मदद ली और अपनी बोलचाल को बेहतर करने के लिए अंग्रेजी कक्षाओं में दाखिला लिया। 27 जुलाई 2024 को

शाम 5:50 बजे, मैं और मेरे पिताजी चंडीगढ़ से साबरमती एक्सप्रेस में सवार होकर अहमदाबाद के लिए निकले। हम 28 जुलाई को दोपहर 1:30 बजे अहमदाबाद पहुंचे। हमारे पास थोड़ा समय था, तो हमने साबरमती आश्रम और साबरमती रिवरफ्रंट घूमा। ये जगहें देखकर मन को सुकून मिला। फिर हम गांधीनगर गए, जहां SSB केंद्र के पास पथिकाश्रम में हमें रुकने की जगह मिली। स्थानीय ऑटो ड्राइवरों की मदद से हमें एक अच्छा कमरा मिल गया।

रात को हमने गुजराती खाना ढूंढा, लेकिन आखिर में चिली पनीर टिक्का खाकर ही पेट भरा। विश्राम गृह लौटकर मैंने अपने सारे दस्तावेज दोबारा चेक किए, अपने औपचारिक कपड़े इस्त्री किए, जूते चमकाए, और सुबह 4 बजे का अलार्म लगाया। मन में एक अजीब सा उत्साह था। मैं अगले दिन की अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए तैयार था, लेकिन साथ ही एक नई उम्मीद भी थी कि कुछ बड़ा होने वाला है।

वह बड़ा दिन: अनजानी संभावनाओं का सामना

सुबह 4 बजे अलार्म की आवाज ने नींद तोड़ी। मैं और मेरे पिताजी जल्दी उठे। मैंने ताजा आर्मी कट करवाया था, साफ दाढ़ी बनाई और अपने साफ–सुथरे औपचारिक कपड़े पहने, टाई और चमकते काले जूतों के साथ मैं तैयार था। सुबह 4:45 बजे हम तेज बारिश में बाहर निकले। ऑटो–रिक्शा ढूंढना मुश्किल था। 15 मिनट की तलाश के बाद, हम 5:20 बजे SSB केंद्र पहुंचे जो समय से पहले था। मैंने पिताजी का आशीर्वाद लिया और दस्तावेज सत्यापन के लिए लाइन में खड़ा हो गया।

तभी मुझे एहसास हुआ कि मेरा आधार कार्ड कहीं खो गया। मैं घबराने वाला था, लेकिन मैंने खुद को संभाला और अपना ई–आधार निकाला, जो स्वीकार कर लिया गया। उस पल मैंने सीखा कि मुश्किल वक्त में शांत रहना कितना जरूरी है। अंदर पहुंचकर सब कुछ नया था और मन में एक हल्की घबराहट सी थी। हमें नए और पुराने उम्मीदवारों में बांटा गया, और चेस्ट नंबर दिए गए। मेरा नंबर 12 था। अधिकारियों ने हमें फॉर्म भरने के बारे में बताया। तभी एक अधिकारी ने मेरा खोया हुआ आधार कार्ड लाकर मुझे दिया, जो प्रवेश द्वार पर मिला था। यह मेरे लिए एक राहत थी और एक संदेश भी कि कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

नाश्ते में हमें आलू की टिक्की और सैंडविच मिला। मैं चाय नहीं पीता, तो सिर्फ खाना खाया। फिर हमें एक बड़े हॉल में ले जाया गया, जहां पहला टेस्ट था–ऑफिसर इंटेलिजेंस रेटिंग (OIR) टेस्ट ।

मुश्किलों से जूझना

OIR टेस्ट में दो सेट थे, प्रत्येक में 20 सवाल और लगभग 17 मिनट का समय। पहला सेट मेरे लिए मुश्किल था। दबाव में मैं घबरा गया और केवल 12 सवाल ही कर पाया। मन उदास हो गया। मुझे लगा कि मैं पिछड़ गया। लेकिन मैंने खुद से कहा, ''जो हो गया, उसे छोड़। अब जो बाकी है, उसमें अपना 100% दे।'' मैंने अपने मन को शांत किया और दूसरे सेट में पूरा ध्यान लगाया। इस बार मैंने 20 के 20 सवाल समय पर पूरे किए। फिर भी, 40 में से 32 सवाल सही करना मुझे कम लगा, क्योंकि एसएसबी की प्रतियोगिता बहुत कड़ी थी। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी और अगले टेस्ट की ओर बढ़ गया।

अगला टेस्ट था पिक्चर परसेप्शन एंड डिस्क्रिप्शन टेस्ट (PPDT)। हमें 30 सेकंड के लिए एक धुंधली तस्वीर दिखाई गई, और चार मिनट में 120–150 शब्दों की कहानी लिखनी थी। मैंने घर पर ऑनलाइन तस्वीरों के साथ अभ्यास किया था, लेकिन यह तस्वीर बहुत अस्पष्ट थी। मैं कुछ समझ पाता, इससे पहले ही 30 सेकंड खत्म हो गए। मैंने जल्दी से एक कहानी शुरू की, लेकिन ढाई मिनट बीत जाने पर मुझे लगा कि यह अच्छी नहीं है। मेरे पास समय कम

था, तो मैंने उसे बदलने की बजाय पूरा करने का फैसला किया। यह मेरा एक छोटा सा फैसला था लेकिन यह मेरे लिए बहुत मायने रखता था।

समूह चर्चा हिम्मत और समझदारी

अंतिम स्क्रीनिंग टेस्ट था ग्रुप डिस्कशन GD यानी समूह चर्चा, जो सचमुच एक ''मछली बाजार'' जैसा था। हमारे 15 लोगों के समूह में सबने अपनी PPDT कहानी सुनाई। मैंने चेस्ट नंबर 12 के रूप में अपनी कहानी 45 सेकंड में आत्मविश्वास से सुनाई। मैंने सुना था कि GD आरंभ करने से फायदा होता है, लेकिन जैसे ही आखिरी उम्मीदवार ने अपनी कहानी खत्म की, सब एक साथ बोलने लगे। शोर इतना था कि चिल्लाने से भी कुछ सुनाई नहीं देता था।

पांच मिनट तक मैं अपनी बात रखने की कोशिश करता रहा लेकिन मेरी आवाज दब रही थी। फिर भी, मैं रुका नहीं। मैंने सबकी कहानियों को ध्यान से सुना और एक ऐसी बात ढूंढी जो हम सभी की कहानियों में समान थी। तभी, एक क्षण की चुप्पी आई–शायद 10 मिलीसेकंड की। मैंने यह मौका लिया और जोर से कहा, ''सज्जनों, मुझे लगता है कि हम सभी इस बात से सहमत हैं कि तस्वीर में एक बचाव मिशन चल रहा है। ''एक–एक करके, सबने सहमति जताई, ''मैं चेस्ट नंबर 12 से सहमत हूं।'' मुझे एक और मौका मिला, और मैंने हमारी सहमति को और मजबूत किया। उस पल मुझे लगा कि मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दे दिया, चाहे रिजल्ट कुछ भी हो।

जीत का पल

ग्रुप डिस्कशन के बाद हमें बाहर नाश्ते वाली जगह पर इंतजार करने को कहा गया। करीब एक घंटे बाद परिणाम की घोषणा हुई। अधिकारी ने स्क्रीन–इन में उत्तीर्ण होने वालों के चेस्ट नंबर पुकारे। मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था। ''चेस्ट नंबर 1, 2, 3...10, और फिर... चेस्ट नंबर 12!'' मैंने जोश से जवाब दिया, ''ओजस्व चौहान, 15 अक्टूबर 2005, सर!'' 130 उम्मीदवारों में से 65 का चयन हुआ, और मैं उनमें से एक था। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं था। यह मेरे हर छोटे कदम, हर कोशिश का नतीजा था।

अगले पांच दिनों की तैयारी के लिए हमें अपने फोन और इलेक्ट्रॉनिक्स जमा करने थे। मैंने अपनी मां का फोन लिया था, लेकिन वह बोतल के रिसाव से भीग गया था और काम नहीं कर रहा था। मैंने एक साथी उम्मीदवार का फोन उधार लिया और अपने माता–पिता को फोन किया। मेरी सफलता की खबर सुनकर वे इतने खुश हुए कि उनकी खुशी ने मेरी खुशी को दोगुना कर दिया।

एक कदम का सबक

मेरी यह SSB यात्रा पूर्णता की कहानी नहीं है यह कोशिश और हिम्मत की कहानी है। हर मुश्किल चाहे तारीखों का टकराव हो, आधार कार्ड का खो जाना, OIR में कमजोर प्रदर्शन, या ग्रुप डिस्कशन का शोर मुझे एक और कदम आगे बढ़ने का मौका दे रही थी। मैंने सीखा कि जीवन में रुकावटें आएंगी, लेकिन अगर आप हिम्मत और मेहनत से आगे बढ़ते हैं, तो असंभव भी संभव हो सकता है। इसलिए आपसे मेरे पाठको से मैं कहना चाहता हूं आपके मन में जो भी सपना है, उसके लिए वह पहला कदम उठाएं। उसे सही होने की जरूरत नहीं, बस आपका होना चाहिए। डर और संदेह को पीछे छोड़ दें, जो आपके बस में है, उसे करें, और यकीन रखिए कि हर कदम आपको आपके सपने के करीब ले जाएगा। एक कदम की ताकत सब कुछ बदल सकती है क्योंकि यह सिर्फ एक कदम नहीं है, यह आपके सपनों को सच करने की आपकी इच्छा की शुरुआत है।

माँ प्रकृति

श्री अमित सिंह, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

प्रकृति एक सुंदर और आवश्यक शक्ति है जो पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखती है। यह हमारे आस–पास की हर चीज को शामिल करती है । ऊंचे पेड़ों और विशाल महासागरों से लेकर सबसे छोटे कीड़ों और फूलों तक। प्रकृति का सामंजस्य पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन को सुनिश्चित करता है और सभी जीवित प्राणियों के पनपने के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करता है। हमारा पर्यावरण स्वच्छ हवा, पानी और भोजन प्रदान करता है साथ ही प्रेरणा और शांति का स्रोत भी है। जब हम प्रकृति की सुंदरता का अनुभव करते हैं तो हमें एहसास होता है कि सब कुछ आपस में कितना जुड़ा हुआ है और भविष्य की पीढियों के लिए इसे सुरक्षित और संरक्षित करना कितना महत्वपूर्ण है।

अगर प्रकृति न होती तो हम जिंदा नहीं होते। प्रकृति के स्वास्थ्य लाभ मनुष्यों के लिए अविश्वसनीय हैं। प्रकृति द्वारा दी गई जीवित रहने के लिए सबसे जरूरी चीज ऑक्सीजन है। श्वसन का पूरा चक्र प्रकृति द्वारा नियंत्रित होता है। हम जो ऑक्सीजन साँस में लेते हैं वह पेड़ हमें देते हैं और जो कार्बन डाइऑक्साइड हम साँस में छोड़ते हैं वह पेड़ ही सोखते हैं।

प्रकृति का पारिस्थितिकी तंत्र एक ऐसा समुदाय है जिसमें उत्पादक (पौधे), उपभोक्ता और अपघटक अपने पर्यावरण में जीवित रहने के लिए एक साथ काम करते हैं। मिट्टी निर्माण, प्रकाश संश्लेषण, पोषक चक्रण और जल चक्रण जैसी प्राकृतिक मूलभूत प्रक्रियाएँ पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में मदद करती हैं। हम इन पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं पर प्रतिदिन निर्भर रहते हैं चाहे हमे इसकी जानकारी हो या न हो।

प्रकृति हमें चौबीसों घंटे सेवाएँ प्रदान करती हैः अनंतिम सेवाएँ, विनियामक सेवाएँ और गैर–भौतिक सेवाएँ। अनंतिम सेवाओं में प्रकृति से निकाले गए लाभ जैसे भोजन, पानी, प्राकृतिक ईंधन और रेशे और औषधीय पौधे शामिल हैं। विनियामक सेवाओं में प्राकृतिक प्रक्रियाओं का विनियमन शामिल है जिसमें अपघटन, जल शोधन, प्रदूषण, कटाव और बाढ़ नियंत्रण और साथ ही जलवायु विनियमन शामिल हैं। गैर–भौतिक सेवाएँ वें हैं जो मनुष्यों के सांस्कृतिक विकास में सुधार करती हैं जैसे कि मनोरंजन, कला, संगीत, वास्तुकला जैसी प्रकृति के साथ बातचीत से रचनात्मक प्रेरणा और स्थानीय और वैश्विक संस्कृतियों पर पारिस्थितिकी तंत्र का प्रभाव।

अध्ययनों और शोधों से पता चला है कि बच्चों का प्रकृति के साथ विशेष रूप से स्वाभाविक लगाव होता है। प्रकृति के साथ नियमित संपर्क ने बच्चों में स्वास्थ्य विकास को बढ़ावा दिया है। प्रकृति उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य

का समर्थन करती है और जैसे–जैसे वे बड़े होते हैं जोखिमों का सामना करने की क्षमता पैदा करती है।

हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का प्राकृतिक चक्र जीवों के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। हम सभी को उन सभी घटकों का ध्यान रखना चाहिए जो हमारी प्रकृति को पूर्ण बनाते हैं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम पानी और हवा को प्रदूषित न करें क्योंकि वे प्रकृति के उपहार हैं।

प्रकृति माँ हमारा पालन–पोषण करती है और हमें कभी नुकसान नहीं पहुंचाती। जो लोग प्रकृति के करीब रहते हैं वे शहरी इलाकों में रहने वालों की तुलना में ज्यादा स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन जीते हैं। प्रकृति हमें बहती ताजी हवा की मधुर ध्वनि देती है जो हमें तरोताजा कर देती है। पक्षियों की मधुर ध्वनियाँ जो हमारे कानों को छू जाती हैं और समुद्र की लहरों की सरसराहट हमें अंदर तक झकझोर देती है।

सभी महान लेखकों और कवियों ने प्रकृति की असाधारण सुंदरता को महसूस करते हुए माँ प्रकृति के बारे में लिखा है। प्रकृति के कवि कहे जाने वाले वर्ड्सवर्थ ने प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध में रहते हुए प्रकृति पर बहुत कुछ लिखा है। प्रकृति को सबसे महान शिक्षक कहा जाता है क्योंकि यह अमरता और नश्वरता का पाठ पढ़ाती है। प्रकृति के निकट संपर्क में रहने से हमारी दृष्टि तीक्ष्ण होती है और पृथ्वी ग्रह के रहस्यों को समझने के लिए हमारी दृष्टि व्यापक होती है। जो लोग प्रकृति से दूर हैं वे उसकी सुंदरता को नहीं समझ सकते। पृथ्वी पर जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों की खपत में वृद्धि हो रही है। कोयला, पेट्रोलियम आदि ईंधनों की बढ़ती माँग के कारण वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। कारखानों और कारों से निकलने वाला धुआँ हमारे द्वारा साँस ली जाने वाली हवा को दूषित कर रहा है। कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड आदि जैसे विषैले वायु प्रदूषकों के प्रभाव को कम करने के लिए हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे।

पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन अनंत नहीं हैं और उन्हें कम समय में फिर से भरा नहीं जा सकता। शहरीकरण में तेजी से वृद्धि ने पेड़ों, खनिजों, जीवाश्म ईंधन और पानी जैसे अधिकांश संसाधनों का उपयोग किया है। आरामदायक जीवन की तलाश में मनुष्य प्रकृति के संसाधनों का बिना सोचे–समझे उपयोग कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, पर्यावरण प्रदूषण, वन्यजीव विनाश और ग्लोबल वार्मिंग जीवित प्राणियों के अस्तित्व के लिए बहुत बड़ा खतरा बन रहे हैं।

हवा जो हमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन देती है वह धुएं, औद्योगिक उत्सर्जन, ऑटोमोबाइल निकास, कोयला, कोक और फर्नेस ऑयल जैसे जीवाश्म ईंधन के जलने और कुछ रसायनों के उपयोग से प्रदूषित हो रही है। यहाँ–वहाँ फेंका गया कचरा और अपशिष्ट वायु और भूमि दोनों को प्रदूषित करते हैं।

सीवेज, जैविक अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट, तेल रिसाव और रसायन जल को प्रदूषित करते हैं। इससे हैजा, पीलिया और टायफायड जैसी कई जल जनित बीमारियों हो रही हैं। कृषि में कीटनाशकों और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग से मृदा प्रदूषण बढ़ता है। औद्योगीकरण और शहरीकरण के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई और हरियाली को नष्ट करने के कारण पारिस्थितिकी संतुलन बहुत बिगड़ गया है। वनों की कटाई से बाढ़ और मृदा क्षरण होता है।

पृथ्वी अब एक बीमार ग्रह बन गई है जो अपने कायाकल्प के लिए देखभाल और पोषण की मांग कर रही है। जब तक मानव जाति प्रकृति को इन बार–बार होने वाली स्थितियों से बचाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास नहीं करती तब

तक पृथ्वी जीवन और गतिविधि के लिए अनुपयुक्त भूमि में बदल जाएगी। हमें वनों की कटाई रोकनी चाहिए और बड़े पैमाने पर पेड़ लगाने चाहिए। इससे न केवल जानवरों को विलुप्त होने से बचाया जा सकेगा बल्कि नियमित वर्षा और मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखने में भी मदद मिलेगी। हमें कोयला, पेट्रोलियम उत्पादों और जलाऊ लकड़ी जैसे जीवाश्म ईंधनों पर अत्यधिक निर्भरता से बचना चाहिए जो वातावरण में हानिकारक प्रदूषक छोड़ते हैं। ऊर्जा की हमारी बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए सौर उर्जा, बायोगैस और पवन उर्जा जैसे गैर–पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग किया जाना चाहिए। इससे ग्लोबल वार्मिंग पर लगाम लगेगी और उसे कम किया जा सकेगा।

पानी की हर बूंद हमारे अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। हमें इसके तर्कसंगत उपयोग, वर्षा जल संचयन, सतही बहिर्वाह की जाँच आदि द्वारा पानी का संरक्षण करना चाहिए। औद्योगिक और घरेलू कचरे को जल निकायों में डालने से पहले उनका उचित उपचार किया जाना चाहिए। हर व्यक्ति अपने आस–पास की प्रकृति को बचाने में अपनी जिम्मेदारी निभा सकता है। एक स्थायी समाज के निर्माण के लिए, हर इंसान को तीन **R - Reduce, Reuse** और **Recycle** का पूरे मन से पालन करना चाहिए। इस तरह हम अपनी प्रकृति को बचा सकते हैं। प्रकृति संरक्षण भावी पीढ़ियों के लिए बहुत आवश्यक है यदि हम प्रकृति को नुकसान पहुंचाएंगे तो हमारी भावी पीढ़ियों को नुकसान उठाना पड़ेगा।

आजकल तकनीकी प्रगति हमारी प्रकृति पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। समृद्धि और सफलता की चाहत में मनुष्य इतना आगे बढ़ गया है कि वह अपने आस–पास की सुंदर प्रकृति के मूल्य और महत्व को ही भूल गया है। प्रकृति के प्रति मानव की अज्ञानता प्रकृति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। लोगों को जागरूक करना और उन्हें प्रकृति का महत्व समझाना आवश्यक है ताकि वे समृद्धि और सफलता की चाह में इसे नष्ट न करें।

हमें सबसे पहले प्रकृति की देखभाल करनी चाहिए ताकि प्रकृति हमारी देखभाल करती रहे। प्रकृति को बचाना हमारे समय की सबसे बड़ी जरूरत है और हमें इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। हमें सादा जीवन और उच्च्य विचार को अपने जीवन का मूलमंत्र बनाना चाहिए। प्रकृति पृथ्वी पर जीवन का आधार है जो हमें जीवित रखने वाले संसाधन और सुंदरता प्रदान करती है। यह न केवल हवा, पानी और भोजन जैसी भौतिक जरूरतें प्रदान करती है बल्कि अपनी शांति और चमत्कारों के माध्यम से भावनात्मक और आध्यात्मिक पोषण भी प्रदान करती है। हालांकि, जैसे–जैसे मानवीय गतिविधियाँ पर्यावरण को खतरे में डालती जा रही हैं, यह जरूरी है कि हम प्रकृति की रक्षा और संरक्षण की अपनी जिम्मेदारी को पहचानें। संधारणीय प्रथाओं को अपनाकर और प्राकृतिक दुनिया का सम्मान करके हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ इसकी जीवनदायी उपस्थिति से लाभान्वित होती रहें। प्रकृति एक उपहार है जिसे पनपने के लिए हमारी देखभाल और ध्यान की आवश्यकता होती है, और इसे सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। भारत सरकार द्वारा इस दिशा में उठाए गए कुछ सराहनीय कदम हैं इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग को प्रोत्साहित करना, सौर उर्जा एवं पवन उर्जा को बढ़ावा देना ।

इस संबंध में एक महत्वपूर्ण कथन है ;

"Someone is sitting in the shade today because someone has planted a tree a long time ago"
Warren Buffett

माँ - बाप

श्री पंकज सिंह,लेखापरीक्षक

का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

जन्म जब मैंने पाया आंखें खोली और ,
प्यारी सी दुनिया को नजर के सामने पाया ,
जहाँ मेरी प्यारी सी माँ और प्यारे से पापा साथ थे ।

है साँस लेने के लिए ऑक्सीजन जितना जरूरी,
उतना ही जरूरी मैने माँ–बाप को पाया,
रह न सकूँ एक पल भी जिनके बिना,
प्यार–दुलार इतना उनका मेरे नसीब में आया।

बिन बादल जैसे बरसात नहीं,
जैसे ही वो घर– घर सा–नहीं जहाँ माँ–बाप नहीं,
घर–संसार को जिन्होंने मेरे लिए सजाया,
मेरे मन में मन्दिर मैंने उनके लिए है बनाया।

गुस्से से जब दुःख उनको मैंने पहुंचाया,
सारे सुख मिलने पर भी मन को सुकून न आया,
वो रूठे मैं मनाऊँ उनको ,

सपनों को सच कर दिखाऊँ उनको,
हैं कितने जरूरी वो मेरी जिन्दगी में
यही हकीकत बतलाऊँ उनको ।

जिस तरह दोनों ने मिलकर पाला है मुझको,
है फर्ज मेरा दो गुना कर के प्यार लौटाऊँ उनको ।

योग का महत्व

श्री विजय कुमार अधलखा, स.ले.प.अ.

का.प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

भारत भूमि ऋषि मुनियों ,तपस्वी एवं योग साधना में सिद्ध महान और पुण्य आत्माओं की जन्म भूमि रही है परन्तु समय के जिस दौर से आज का मानव गुजर रहा है वहां उसे दुःख, चिंता, तनाव तथा परेशानियों का सामना करना पड रहा है तथा इसके चलते आज का मानव जीवन का सच्चा सुख तथा आनंद भूलता जा रहा है ।

यह सत्य है कि धन, सम्पति, भौतिक पदार्थ थोड़े समय का सुख व आराम अवश्य देते हैं परन्तु चिर स्थायी रहने वाला सुख एवं आत्मा के आनंद की वह स्थिति जहाँ आत्मा सच्चे सुख की अनुभूति दीर्घ काल तक करे उससे आज का मानव वंचित है। विनाश भोगी पदार्थों से मिलने वाला सुख विनाशी ही होता है एवं स्थायी सुख प्राप्त करने का एक मात्र उपाय योग साधना है ।

गीता में भगवान ने कई प्रकार के योगों का वर्णन किया है जैसे राजयोग, भक्ति योग, कर्म योग, हठ योग एवं शारीरिक योग लेकिन इनमें से श्रेष्ठ योग राजयोग को माना जाता है क्योंकि यह योग इतना सहज है कि राजा जैसा व्यस्त रहने वाला व्यक्ति भी कर सकता है। यह कोई कठिन शारीरिक योग नहीं हैं राजयोग जीवन की एक शैली है जिसमें आत्मा स्वयं को भरपूर अनुभव करती है।

पुनर्जन्म लेते लेते आज हर आत्मा स्वयं को अंदर से खाली महसूस करती है। सभी पदार्थ होते हुए भी अंदर से अशांति का अनुभव करती है। इसका समाधान है योग, योग साधना से हम स्वयं को अपने परमपिता परमात्मा, निरंकार, ज्योतिबिंदु से जोड़तें हैं जिससे हमें जन्म–जन्मांतर के पापों एवं विकर्मों से मुक्ति मिलती है। हमारी आत्मा पर जो विकर्मों का बोझ है वह न तो गंगा के पावन जल में स्नान करने से समाप्त हो सकता है और ना ही किसी शारीरिक व्यायाम के माध्यम से हम उससे मुक्ति पा सकते हैं। इससे मुक्ति पाने का एक ही साधन राजयोग है जिसे आधुनिक भाषा में मेडिटेशन कहा जाता है। राजयोग संस्कृत भाषा के दो शब्दों 'राज' और 'योग' के मिश्रण से बना है जिसका आध्यात्मिक अभ्यास में अर्थ अपनी कर्म इन्द्रियों पर नियंत्रण पाना है। राजयोग के नियमित अभ्यास से हम अनेक शक्तियों से भरपूर हो जाते हैं जैसे कि सहन शक्ति। आम के वृक्ष पर जब कोई व्यक्ति पत्थर मारता है तो वह

वृक्ष उसे मीठा एवं गुणकारी आम का फल देता है। ज्ञानयोगी पुरुष उन व्यक्तियों के बारे में भी सकारात्मक सोच रखते हैं जो उनके प्रति अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करते हैं। यही अंतर हैं साधारण मानव में तथा शक्तिशाली आत्मा में क्योंकि ऐसी आत्माएं सहनशक्ति से भरपूर होती हैं। उनका ज्यादा समय आत्म चिंतन में व्यतीत होता है ।

सुप्रसिद्ध योगी एवं दार्शनिक श्री अरविन्द घोष का कहना है कि "संपूर्ण जीवन ही योग है " जैसे एक शिशु का योग उसके माता– पिता से होता है फिर उसका योग पढाई से तथा मित्रों से होता है, युवा अवस्था में उसका योग अपने कार्य से व पत्नी से तथा अपनी संतान से होता है। सारी जीवन यात्रा में व्यक्ति संबंधों के इस पड़ाव में सच्चा योग जो कि आत्मा और परमात्मा का है उससे विस्मृत रहता है ।

बीज रूपी परमात्मा से जब हम योग (ध्यान) लगाते हैं तो हमारे जन्म–जन्मान्तर के दुःख समाप्त हो जाते हैं एवं हमारी आत्मा असीम सुख का अनुभव करती है । योग के भी कई सोपान है आरंभ में आत्मा सुख शांति का अनुभव करती हैं लेकिन नियमित अभ्यास से साक्षी, द्रष्टा तथा स्थितप्रज्ञ का अनुभव प्राप्त किया जा सकता है ।

योग से हमारे जीवन में एकाग्रता का अभ्यास बढ़ता है जिससे हम थोड़े समय में बहुत कार्य करने में समर्थ बन जाते हैं जिसका प्रभाव हमारी कार्यकुशलता पर अवश्य पड़ता है । निरंतर योग अभ्यास तथा वैराग्य से हमारे मन की चंचलता पर अंकुश लगता है एवं हमारे जीवन में संतुलन तथा अनुशासन आता है जिससे हम सफलता के मार्ग पर बढ़ते जाते हैं, यही जीवन की कला है ।

योगः कर्मसु कौशलम्।

अर्थात् कर्मों को कुशलता से करना ही योग है और यह कुशलता समत्व (समानता) की भावना से आती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) वरदान या अभिशाप

श्री आमोद दीक्षित, स.ले.प.अ.
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चंडीगढ़

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) AI आज के समय में जितनी तेजी से विकसित हो रही है, वह आने वाले समय में मानव जीवन के हर क्षेत्र को गहराई से प्रभावित करेगी। AI केवल एक तकनीकी नवाचार नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन के हर पहलू में बदलाव लाने वाली क्रांति है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, व्यापार, सुरक्षा और मनोरंजन जैसे कई क्षेत्रों में AI का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है और भविष्य में इसकी भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी।

1. शिक्षा क्षेत्र में AI का प्रभाव

AI शिक्षा को अधिक व्यक्तिगत और प्रभावशाली बना रहा है। स्मार्ट ट्यूटर, अनुकूलित पाठ्यक्रम (Customized curriculum) और डेटा–आधारित मूल्यांकन प्रणाली से छात्रों को उनकी गति और शैली के अनुसार शिक्षा मिल रही है। आने वाले समय में AI शिक्षक और छात्रों के बीच एक सहयोगी के रूप में कार्य करेगा, जिससे सीखने की प्रक्रिया और भी सहज व प्रभावी हो सकेगी।

2. स्वास्थ्य सेवाओं में AI की भूमिका

स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में AI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती जा रही है। AI की सहायता से रोगों की जल्दी पहचान, निदान और इलाज संभव हो रहा है। भविष्य में रोबोटिक सर्जरी, वर्चुअल नर्स, और मेडिकल डेटा एनालिटिक्स जैसी तकनीकों से स्वास्थ्य सेवाएं और अधिक सटीक, सस्ती और सुलभ हो जाएंगी।

3. कृषि क्षेत्र में AI का योगदान

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में AI किसानों के लिए वरदान साबित हो सकता है। स्मार्ट सेंसर्स, ड्रोन, मौसम की भविष्यवाणी और मिट्टी की गुणवत्ता का विश्लेषण करने वाली AI तकनीकें किसानों को बेहतर निर्णय लेने में मदद करेंगी। इससे उत्पादन बढ़ेगा और खेती अधिक लाभदायक बनेगी।

4. व्यापार और उद्योग में AI

AI व्यवसायों को तेज निर्णय लेने, ग्राहक अनुभव सुधारने और संचालन की लागत कम करने में सक्षम बना रहा है। चैटबॉट, मशीन लर्निंग–आधारित विश्लेषण, और स्वचालन (Automation) की मदद से कंपनियाँ अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बन रही हैं। भविष्य में व्यवसायों में मानवीय हस्तक्षेप कम और स्वचालित प्रक्रियाएँ अधिक देखने को मिलेंगी।

5. सुरक्षा और रक्षा क्षेत्र में AI

सुरक्षा एजेंसियाँ AI का प्रयोग निगरानी, साइबर सुरक्षा और आतंकी गतिविधियों की पहचान कर रही हैं। भविष्य में AI आधारित डिफेंस सिस्टम, ड्रोन और निगरानी तंत्र देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा को और मजबूत बनाएंगे।

6. मनोरंजन और मीडिया में AI

AI का प्रभाव फिल्मों, गेमिंग और सोशल मीडिया जैसे क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है। AI आधारित स्क्रिप्ट लेखन, वर्चुअल इफेक्ट्स और उपभोक्ता की पसंद के अनुसार कंटेंट निर्माण जैसे नवाचार मनोरंजन जगत को पूरी तरह बदल रहे हैं। जैसे किसी भी चीज के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार से AI के भी दो पहलू हैं एक फायदेमंद दूसरा नुकसानदायक। AI के कुछ मुख्य नुकसान इस प्रकार हैं:

1. बेरोजगारी

AI और ऑटोमेशन के कारण बहुत से काम मशीनों से होने लगे हैं, जिससे लोगों की नौकरियाँ चली जाती हैं, खासकर मैन्युअल या रिपिटिटिव कामों में। उदाहरणतः फैक्ट्रियों में रोबोट्स का इस्तेमाल मैनुअल लेबर की जगह ले रहा है।

2. डेटा की गोपनीयता

AI सिस्टम यूजर्स का बहुत सारा पर्सनल डेटा इकट्ठा करते हैं, जिससे उनकी प्राइवेसी खतरे में पड़ सकती है जिस वजह से डाटा माइनिंग जैसी समस्या आ रही है जहाँ निजी कम्पनियां आम नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी चोरी कर उसका दुरपयोग कर रही हैं ।

3. नैतिक चुनौतियाँ

AI कब, कहाँ और कैसे इस्तेमाल किया जाए, इस पर नैतिक सवाल उठते हैं। उदाहरण के लिए फेस रिकग्निशन टेक्नोलॉजी का दुरुपयोग

4. निर्णय लेने में पारदर्शिता की कमी

AI सिस्टम कैसे निर्णय लेता है, यह आम लोगों के लिए समझना मुश्किल होता है। इसे "ब्लैक बॉक्स" समस्या कहा जाता है जिसका नियंत्रण चंद लोगों के हाथों में ही रहता है।

5. उच्च लागत

AI सिस्टम को विकसित करना, ट्रेन करना और मेंटेन करना महंगा होता है। छोटे व्यापार या गरीब देशों के लिए यह कठिन हो सकता है। भारत जैसे विकाशील देश के लिए जहाँ अभी भी बहुत गरीबी है वहां अभी इतना पैसा कितना प्रभावशील होगा यह चिंतन का विषय है ।

6. भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी

AI इंसानों की तरह भावनाएँ, सहानुभूति या नैतिक निर्णय नहीं ले सकता। यह केवल प्रोग्राम्ड निर्णय ही लेता है और इसमें आत्मीयता की कमी है जो कि मनुष्यों के साथ व्यवहार करने के लिए बहुत जरूरी है ।

7. दुरुपयोग की संभावना

AI का इस्तेमाल गलत उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है जैसे फेक न्यूज फैलाना, डीपफेक वीडियो बनाना, साइबर क्राइम आदि। मशीनों को चलाना ज्यादा आसान है क्योंकि मशीन को सही या गलत का अंतर नहीं पता ।

8. निर्भरता बढ़ना

लोग अगर AI पर ज़्यादा निर्भर हो जाते हैं, तो उनकी खुद की सोचने और निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो सकती है। इसका एक उदाहरण बच्चों का चैटजीपीटी का पढाई में उपयोग करना। AI एक ऐसा उपकरण है जो मानव जीवन को अधिक उन्नत, सुगम और कुशल बना सकता है। लेकिन इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि हम AI के नैतिक, सामाजिक और रोजगार पर पड़ने वाले प्रभावों पर भी ध्यान दें। सही दिशा में विकास और उचित नीतियों के माध्यम से AI न केवल हमारी वर्तमान समस्याओं का समाधान बन सकता है, बल्कि एक बेहतर और अधिक सक्षम भविष्य की नींव रख सकता है मगर इसका दुरुपयोग मानव जाति के लिए बहुत भयावह हो सकता है।

वसंत की वाणी

श्री यादेव सिंह, सहायक पर्यवेक्षक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़

चुप थी धरती महीनों से,
थकी हुई सी, बुझी–बुझी,
ठिठुरती ठंडी साँसों में
जैसे कोई गजल अधूरी सी।

पर फिर आई मधुर बयार,
फूलों ने खोले अपने द्वार,
टहनियाँ बोलीं जागो–जागो,
आया है फिर वसंत अपार।

पेड़ों की शाखों पर देखो,
हरियाली ने ली अँगड़ाई,
कोयल कूक रही मनमोही,
लेकर नयी प्रणय–छाँव लाई।

सरसों के खेतों में सुनहरी
धूप उतरती साड़ी सी,
भँवरों की मीठी गूँज जैसे,
हो कोई राग मधुरबाणी सी।

नव पल्लव झूल रहे पथ पर,
तितली फड़फड़ भाग रही,
हर डाल, हर पत्ती बोले,
"प्रकृति फिर से जाग रही।"

गुलाब, चमेली, पलाश सजे
धरती की गोदी भर आई,
साँझ–सवेरा अब रंगीन है,
प्रेम की ऋतु मुस्काई।

बागों में चंचल झूले हैं,
सावन से पहले उत्सव है,
फूलों में रस, पवन में साज,
मन को यह अद्भुत अनुभव है।

कवियों की लेखनी थिरके,
रंगों में घुल जाए तान,
मदहोशी सी छाई है,
हर ओर बसी है नई जान।

शहरों में भी पेड़ों की छाँव
अब फिर से हरी–भरी सी,
कंक्रीट के जंगल में भी,
महक रही एक परी–सी।

यह ऋतु है हँसी की, गीतों की,
नई उमंग, नवीन रीतों की,
प्रकृति का नव श्रृंगार यही,
वसंत है जीवन की प्रीति की।

नवयौवन–सा मौसम आया
किसलय सी नर्म छुअन लिए,
मन, मयूर–सा नाच रहा है,
विरह भूल, मिलन लिए।

गाँव की गलियों में फिर
फागुन की मस्ती छाई है,
रंग–गुलाल, होली की टोली,
खुशियों की सौगात लाई है।

वसंत नहीं बस एक ऋतु है,
यह एक संदेश बहारों का,
कि चाहे सर्दी कितनी हो,
समय आता है संवारों का।

चेहरों पर मुस्कान है आज,
हुआ ठण्ड शीत का अंत,
पेड़–पौधे भी खुश हो रहे हैं,
आ गया मनोहर वसंत।

मुझे आदत नहीं बातों की...

श्री अनंत राम,
हिंदी अनुवादक
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केन्द्रीय)चंडीगढ़

मुझे आदत नहीं बातों की कुछ कर दिखाना चाहता हूँ ,
रात को रवि धरती को स्वर्ग बनाना चाहता हूँ ,
मेरी मंजिल के दरवाजे भले ही बंद हैं,
हिम्मत और मेरे हौसले बुलंद है ।

फनाह कर सकूं दरिंदों को ऐसी साजिश बनना चाहता हूँ ,
दिवाली में रंग, होली में आतिश चाहता हूँ,
सामने मेरे पहाड़ बड़े या दीवारें कितनी ही ऊंची हो,
मुझ से टकराने वालों की आंखें हमेशा नीची हों।

जीत ना पाऊं फिर भी मुकाबला करना चाहता हूँ ,
इतिहास के पन्नों में अपना भी नाम लिखना चाहता हूँ।

क्यों राह में हमें इतने काटे दिए हैं,
क्यों हर मंथन के विष हमने पिए हैं,
सहानुभूति का पात्र नहीं, मैं विश्वास चाहता हूँ,
ज्यादा कुछ नहीं बस थोड़ा सम्मान चाहता हूँ।

चंडीगढ़ के प्रमुख दर्शनीय स्थल

संयुक्ता 2024–25 अंक ग्यारहवाँ

अंक ग्यारहवाँ

संयुक्ता

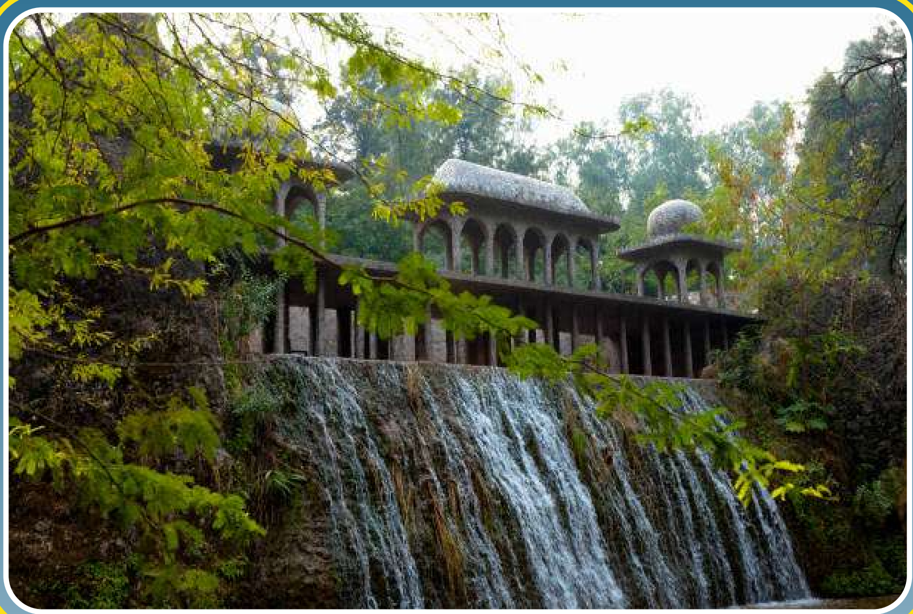
रॉक गार्डन, चण्डीगढ़

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चंडीगढ़
2024-2025